॥ धर्मश्री: सर्वमंगला ॥

ॐ

गीता परिवार

श्रीकृष्ण सेवा निधि

संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान

धर्मश्री

अक्तुबर से दिसंबर २०२०

राम नींव है भारत की, उसके मंदिर की नींव रखें।
राष्ट्र खडा होगा समर्थ, गतिमान रहेगा बिना रुके ।।

गुरुपौर्णिमा दर्शन

स्व. दत्तोपंतजी ठेंगडी जन्मशती – पू. सरसंघचालक के साथ

अन्नदान योजना – आलंदी

|| धर्मश्री ||

परम पूज्य आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

धर्मश्री

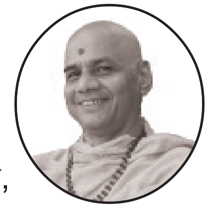

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाषः (०२०) २५६५२५८९, २५६७२०६९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाईट: www.dharmashree.org

वर्ष १९ अंक २ चैत्र, युगाब्द ५१२१ त्रैमास : अक्तुबर, २०२०

संपादक :
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक :
श्री. भालचन्द्र व्यास
संपादक मंडल :
श्री. गिरीश डागा
पं. प्रणव पटवारी
पं. शांतनु रिठे
मार्गदर्शक :
प्रा. दत्तात्रय दि. काळे,
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी :
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक :
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी., मुखपृष्ठ :
जैनको कम्प्यूटर्स, अजमेर
सौ. अंजली गोसावी,
मुद्रक : **श्री. संजय भंडारे, पुणे**
स्वानंद प्रिंटर्स, डेक्कन जिमखाना,
पुणे – ४११००४
मो. नं.: ९८२३०१४८६२
ई–मेल:svbhandare21@gmail.com

सूचना
पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। – संपादक

अनुक्रम

४.	संपादकीय
५.	राम मंदिर आधुनिक भारत की संस्कृति का प्रतीक यह राष्ट्र को जोड़ेगा
६.	राममंदिर निर्माण से राष्ट्र की आत्मा सुप्रतिष्ठित होगी!
७.	पत्र प.पू. गुरुदेव स्वामी गोविंददेव गिरि महाराज
९.	राम मंदिर शिलापूजन पर श्रद्धालुओं की प्रतिक्रियाएं
१०.	लालनलीला
११.	दुर्लभ साथी
१२.	निष्काम महायोगी स्व. सुरेश जी जाधव सर
१५.	प.पूज्य गुरुदेव के साथ मेरा जीवन प्रवास
१९.	शक्ति-भक्ति और योग के अद्भुत संगम आदरणीय जाधव सर
२०.	जाधव सर : एक उत्तम गुरु !
२१.	ओकिनावा मार्शल आर्ट्स अकादेमी के एक मजबूत स्तंभः शिहान सुरेशजी जाधव!
२२.	'गृहस्थ संन्यासी' 'महायोद्धा' श्री सुरेश जी जाधव!
३०.	...... **श्रद्धासुमन**

कृपया ध्यान दें।

आगामी अंक से 'धर्मश्री' अंक केवल ई–अंक के रूप में (PDF) प्रसिद्ध होने जा रहा है।
यदि आप वह प्राप्त करना चाहते हैं तो कृपया
आपका नाम, मोबाईल क्रमांक (Whats'aap No.) तथा ई–मेल आयडी
9423005027 इस क्रमांक पर दि. 01 दिसंबर 2020 तक भेज दें।
– संपादक

धर्मश्री के इस अंक के यजमान

श्री. भंवरलालजी सोनी

जोधपुर, राजस्थान

साभिनंदन धन्यवाद!

संपादकीय

इस अंकका संपादकीय लिखते समय मन में एक साथ कईं भावनाएं उमड पडी हैं– उत्साह और अभिनंदन; कृतार्थता और समाधान तथा ज्येष्ठ सहयोगियों के चिरविरह के कारण दुःख एवं कातरता।

शताब्दियों के प्रखर संघर्ष के पश्चात् श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के शिलान्यास समारोह के हम सभी दूर से क्यों न हो साक्षी बने। यह स्वर्णिम क्षण तब सुगंधित भी हुआ जब मा.श्री. नरेंद्रजी मोदी द्वारा संपन्न इस समारोह का अध्वर्यूपद हमने हमारे पूज्य गुरुवर को विभूषित करते देखा। आप सभी यह जानकर प्रसन्न होंगे यह निर्माण कार्य सभी प्रकारसे विश्व में आदर्शवत हो इस हेतु सभी स्तरपर नियोजन प्रारंभ हुआ है। और हमारे पू. गुरुदेव भी अपनी कोषाध्यक्ष पदपर संतुष्ट न रहकर इस पूरे प्रकल्प पर बारीकी से नजर रखे हैं।

गत छः महिनों से चली वैश्विक महामारी ने अन्यों की भांतति हमें भी क्षणकाल दिङ्मूढ कर दिया। परंतु शीघ्र ही संभलकर सभी ने रचनात्मक दृष्टि से और सभी के सहयोग से अंगीकृत कार्य आगे चालू रखे ही नहीं तो कईं नये क्षेत्र भी खोल दिये। महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के सभी वेदविद्यालय ऑनलाइन हो गये, सभी न्यासी मंडल सभाएं भी आभासी (वर्चुअल) हो गयी, गीता परिवार ने तो ४० देशों के ११ हजार जिज्ञासुओं हेतु ८ भाषाओं में गीता अध्ययन वर्गों का प्रारंभ कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। कथा, शिविर, हरिहर भक्तिमहोत्सव आदि सब स्थगित होने के कारण तृषार्त भाविकों हेतु प.पू. स्वामीजी ने तो यू ट्यूब तथा फेसबुक के माध्यम से अमृतवर्षा ही की। साथ में ही महामारी निर्मित आपातकाल का भान रखते हुए गीता परिवार ने लखनौ में तो श्रीकृष्ण सेवा निधि ने महाराष्ट्र में पीडितों की प्रशंसनीय सेवा की।

परंतु इस हर्षोल्लास एवं संतोष की धूप के साथ कुछ दुःख भरे कृष्णमेघ भी छा गये। ये सारे दिव्य उपक्रम वास्तव में जिनके बल पर चलते हैं, जो यथासंभव तन–मन–धन–ज्ञान–समय से इन कार्यों ने ऊर्जास्रोत होते हैं, बिना किसी लाभ–सम्मान–प्रसिद्धी के मोह से दूर रहते हुए जो केवल आत्मसंतोष हेतु तथा ईश्वरपूजाकी भावनासे सत्कर्मों में निरत रहे। ऐसे इस जगन्नाथ की रथयात्रा के सहयोगी हमसे सदा के लिए बिछुड कर ईश्वरचरणों में लीन हो गए। इनके विरह का दुःख तो स्वाभाविक है। किंतु कृतज्ञतापूर्वक उनका स्मरण करना, उनसे प्रेरणा लेना और कार्य की ध्वजा फिरसे उठाकर मार्गक्रमणा करते रहना यही हमारा प्रभुनिर्दिष्ट कर्तव्य बनता है।

राम मंदिर आधुनिक भारत की संस्कृति का प्रतीक यह राष्ट्र को जोड़ेगा : प्रधान मंत्री, श्री मोदी

प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा कि अयोध्या में बनने वाला भव्य राममंदिर भारतीय संस्कृति का आधुनिक प्रतीक बनेगा। मंदिर निर्माण की प्रक्रिया पूरे देश को जोड़ने का उपक्रम बनेगी। मंदिर बनने के बाद अयोध्या की न सिर्फ भव्यता बढ़ेगी; अपितु देश का अर्थतंत्र भी बदल जाएगा। भूमिपूजन के बाद प्रधान मंत्री जी ने कहा कि राम हमें समय के साथ आगे बढ़ना सिखाते हैं। राम की रीति–नीति और कर्त्तव्य पालन का उल्लेख करते हुए प्रधान मंत्री जी ने कहा कि हमें सबके साथ और सब के विश्वास के साथ सबका विकास करना है।

प्रधान मंत्री के संबोधन के कतिपय प्रेरणादायक बिंदु !

'राम काज'

मोदीजी ने कहा, ''राम काज किन्हें बिनु मोहि कहाँ विश्राम। यानी– भगवान राम का काम किए बिना मुझे विश्राम कहाँ? राम के सब काम हनुमानजी करते हैं और उन्हीं के आशीर्वाद से आज भूमिपूजन हुआ है।''

५ अगस्त का दिन ठीक
१५ अगस्त जैसा ही है!

आपने कहा, '१५ अगस्त अथाह तप और लाखों बलिदानों का प्रतीक है। उसी तरह राम मंदिर के लिए सदियों तक पीढ़ियों ने प्रयास किए हैं। आज का दिन उसी तप, त्याग और संकल्प का प्रतीक है।'

'राम मय भारत'

आज के दिन पूरा भारत भावुक और राममय हुआ है। कन्याकुमारी से क्षीरभवानी, कोटेश्वर से कामाख्या, जगन्नाथपुरी से केदारनाथ, सोमनाथ से काशी, बोधगया से सारनाथ, अमृतसर से पटनासाहिब और अंडमान से अजमेर तक सब राममय है।

....शेष पृष्ठ ६ पर

राममंदिर निर्माण से राष्ट्र की आत्मा सुप्रतिष्ठित होगी!

– आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज
कोषाध्यक्ष, राम जन्मभूमि न्यास

आज अत्यंत हर्षोल्हास का विषय है कि सदियों तक जिस क्षण की प्रतीक्षा की थी, वह क्षण आखिर आज साकार हुआ। सरयू मैया के पावन तट पर भगवान श्रीरामजी की जन्मस्थली में उनके गौरव के अनुरूप भव्य-दिव्य मंदिर बनाने के लिए हमारे देश के सम्माननीय प्रधान मंत्री, विश्वमान्य नेतृत्व जिनके पास है, ऐसे श्री नरेंद्र भाई मोदीजी ने अपने मंगल हाथों इस मंदिर के निर्माण-कार्य का शुभारंभ करके सबको गद्-गद् कर दिया। जो उपस्थित थे, वे ही नहीं; जो दूरदर्शन पर अथवा अन्य माध्यमों से इस कार्यक्रम को देख रहे थे; वे ही नहीं; किंतु जिन महान कारसेवकों ने अपना बलिदान इस भूमि की मुक्ति के लिए दिया, वे और गत पाँच सदियों से अनवरत संघर्ष करने वाले सभी पुण्यात्मा-आज गद्-गद् हो गये। आज सही अर्थों में उनका संतर्पण हुआ। इस संतर्पण और कार्य का आरंभ, ये शिलान्यास, केवल एक मंदिर का ही नहीं है, मंदिर तो भगवान का वहाँ भव्य-दिव्य बनेगा ही; किंतु 'राष्ट्र के मंदिर' को सँवारने के लिए, यह कार्य अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

भगवान श्रीराम हमारी राष्ट्रीय चेतना की आत्मा हैं और इसलिए उनके मंदिर के शिलान्यास के रूप में पुन: इस राष्ट्र की आत्मा सुप्रतिष्ठित हो रही है, जिसका भान हम लोगों को होना चाहिए।

स्वतंत्रता तो हमने पाई, अंग्रेज गए, लेकिन इस देश का मूल स्वाभिमान जाग्रत नहीं हुआ। इस देश की जो परंपरा रही, उसके साथ होने वाली प्रताड़ना अब समाप्त होती जा रही है।

अब भारत जगेगा, अब यह राष्ट्र उठेगा और **''सर्वे भवंतु सुखिन: सर्वे संतु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मां कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।''** यह जो वैदिक ऋषियों की परमात्मा के प्रति प्रार्थना है, उस प्रार्थना को साकार करने के लिए एक अजेय, अखंड और अतुलनीय सशक्त भारत को खड़ा करके रहेगी, इस देश की जनता की इच्छाशक्ति। मित्रों! आज का शिलान्यास इसी बात का शिलान्यास है। और इसलिए आइए, उस बंधुत्व की भावना लेकर, समरसता का व्रत लेकर के संस्कारों के बीज लेकर के, भगवान श्रीराम की भक्ति को अंत:करण में लेकर के इस मार्ग पर निरंतर चलते रहें तो अपने आप वो मंगलमय दिन आएगा, जब सारा संसार भारत माँ की आरती उतारने के लिए सिद्ध होगा।

जय श्री राम!

पृष्ठ ५ का शेष...

'राम नाम की शक्ति देखिए'

२७ साल से टेंट में रहे, अब रामलला का भव्य मंदिर बनेगा। उनकी शक्ति देखिये। इमारतें नष्ट कर दी गईं, अस्तित्व मिटाने के प्रयास हुए; लेकिन राम हमारे मन में हैं।

'भावी पीढ़ियों का दायित्व'

आप ने कहा कि अयोध्या में बनने वाला राम मंदिर हमारी संस्कृति का आधुनिक प्रतीक बनेगा। आने वाली पीढ़यों को आस्था और संकल्प की प्रेरणा देगा। श्री राम का संदेश पूरी दुनिया तक पहुँचाने का दायित्व भावी पीढ़यों का है।

'चेतावनी'

प्रधान मंत्रीजी ने चेतावनी देते हुए कहा कि जब-जब हम राम के रास्ते से भटके, तभी विनाश के रास्ते खुले। श्री राम की नीति है, ''भय बिन होइ न प्रीत''। देश जितना ताकतवर होगा, उतनी ही शांति बनी रहेगी। यही राम की नीति है। रामराज्य के सूत्र भी यही थे। राम आधुनिकता के पक्षधर हैं।

।। श्रीहरिः ।।

विद्यावाचस्पति–आचार्य
स्वामी गोविन्ददेव गिरि
(कोषाध्यक्ष, श्री रामजन्मभूमि तीर्थक्षेत्र, अयोध्या)

'धर्मश्री', मानसर अपार्टमेंटस
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे ४११ ०१६
दूरभाष : (०२०) २५६५२५८९, २५६७२०६९
Email : swamigovindgiriji@gmail.com
dharmashree123@gmail.com

विश्वहृदय–साम्राज्य–चक्रवर्ती, श्रद्धेय रामभक्त,
माननीय प्रधानमंत्री महोदय, श्री. नरेंद्रभाई मोदीजी
भारत सरकार, नई दिल्ली

जय श्री सीताराम!

सुरक्षा प्रबंधन की अनगिनत आशंकाएं तथा वैश्विक महामारी की त्रासदी की उपेक्षा करके भी श्रीरामजन्म भूमि तीर्थक्षेत्र न्यास की विनम्र प्रार्थना का स्वीकार कर हृदयस्थ उत्कट श्रीरामभक्ति से प्रेरित हो आपने अयोध्या की पावन धरापर पधारकर सभी को भावविभोर कर दिया।

श्री हनुमान गढी में रामभक्ति के प्राणतत्त्व श्री हनुमानजी तथा तात्कालिक छोटे से देवालय में विराजमान प्रचंड संघर्ष प्रवाह के केंद्रीय शाश्वत ऊर्जातत्त्व श्री रामलला के दर्शन आपने जिस भक्तिभावसे किये वह नूतन पीढियों के लिए स्थायी संस्कारपाठ बन गया। प्रभु के समक्ष आपके दण्डवत् प्रणाम ने कोटि कोटि नेत्रोंको भाव–सजल कर दिया।

अत्यंत स्थिरचित्त हो जिस शांति एवं श्रद्धासहित आप शिलापूजन कर रहे थे वह आपकी दुर्लभ भावमग्नता सबको अचंभित कर रही थी, पर हमें वह स्वाभाविक ही लग रही थी, क्योंकि हम समझ रहे थे कि आप उन असंख्य देशवासियों की श्रद्धा का पूजन कर रहे थे जिन्होंने दशकों पूर्व उमडते उत्साह से इन शिलाओंको देश के कोने–कोने से पूजा कर प्रेषित किया था। पूजा के अंतर्गत आपसे समर्पित अपने साथ लाये हुए छोटे से रजत कलश में अलौकिक भाग्यवती धन्य माताजी पूज्या हीराबेन जी द्वारा प्रेषित साबरमती का तीर्थ था, अथवा आपके द्वारा गलवान से लौटते समय संपन्न सिंधु–पूजा के समय संगृहीत वियोगिनी पवित्र सिंधु का तीर्थ था, अथवा गोधरा के हुतात्मा कारसेवक रामभक्तोंकी पवित्र रक्षा थी या POK से चुपचाप मंगाई हुई मृत्तिका किंवा कलश के अवकाश में ये सभी भाव भरे थे, हमें पता नहीं। पर उसके माध्यम से शताब्दियों के बलिदानी रामभक्तों का सश्रद्ध संतर्पण संपन्न हो रहा था यह अनुभूति हमें पुन: पुन: रोमांचित कर रही थी और पूजनोपरांत अवध की पवित्र मृत्तिका का तिलक आपने स्वयं के भालपर किया तो एकदम गीत की पंक्तियां साकार हो उठी..... **'अस्य मृत्तिका शिरसा वन्द्या भूमिरियं बलिदानस्य।'**

श्री रामकथा के प्रसिद्ध वक्ताओंको भी मुग्ध कर देनेवाले आपके विदग्ध ऐतिहासिक उद्‌बोधन में आपने क्या नहीं कहा? उसमें बार बार स्पंदित ऋषिप्रज्ञाने श्रीराम को भारतीय जीवनादर्श के रूप में तो पुन:स्थापित किया ही, साथ साथ 'राम सबके, राम सब में' के स्वर में श्रीराम का विश्वव्यापक स्वरूप सबके समक्ष प्रमाणित कर, राम केवल भारतीय संस्कृति के ही नहीं, अपितु विश्वमांगल्य के प्राणतत्त्व हैं ओर विश्वबंधुत्व भाव के विकास में, अनेकता में एकता देखनेवाले भारतवर्ष को ही नेतृत्व करना पडेगा, उस नेतृत्व के लिए सामर्थ्य संपन्न भी बनना पडेगा यह भावी कार्य का दिशा निर्देश भी आपने कर दिया।

बार बार रोमांचित करनेवाला आपकी अद्‌भुत वाणीका अजस्र प्रवाह, विश्वमान्य नेतृत्व होकर भी आपका सहज विनय और भगवान् श्रीराम एवं भारतीय सांस्कृतिक जीवनमूल्यों के प्रति आपका दृढ भक्तिभाव

सबको इतना प्रभावित कर गया कि सबके मुखसे एकही बात आंसूभरे नेत्रों सहित दोहराई जा रही थी – '**न भूतो, न भविष्यति**'.... आपको हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि आपसहित समस्त रामभक्तों के स्वप्न का श्रीराम मंदिर साकार करने में हम उसी तरह जुटने का प्रयास करेंगे जैसे भारतीय गौरव को वृद्धिंगत करने में आप जुटे हुए हैं।

आपके इस निमंत्रण स्वीकार के लिए 'धन्यवाद' ही क्या, सभी शब्द अधूरे लगते हैं। हम सभी अवधवासी कृतज्ञ हैं! हाँ! भगवान् रामलला कह रहे हैं –

तुम मम सखा भरत सम भ्राता ।
सदा रहेहु पुर आवत जाता ।।

श्रीरामलला की सेवा में संलग्न

भवदीय

स्वामी गोविंददेवगिरिः

कृते

अध्यक्ष एवं समस्त न्यासी मंडल

श्री रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र (न्यास)

श्रावण कृ. १३ सोमवार
युगाद्ब ५१२२ दि.१७/०८/२०२०

भारत माता की जय!

। महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान। । संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल । । श्री कृष्ण सेवा निधि। । गीत परिवार ।

एक ऐतिहासिक पत्र

कहते हैं, a picture speaks a thousand words; किंतु 'पूज्यश्री' द्वारा लिखित इस पत्र में प्रत्येक शब्द एक गहरा अर्थ लेकर व्यापक रूप से अभिव्यक्त हो रहा है। संबोधन से लेकर समापन तक प्रत्येक शब्द गागर में सागर को समाये हुए है।

पूज्य गुरुदेव ने हमारे प्रधानमंत्री जी को 'विश्वहृदय-साम्राज्य-चक्रवर्ती' कहकर संबोधित किया है। कितना गहरा अर्थ छिपा है इसमें; जो वाजपेयी जी की याद दिला देता है। वाजपेयीजी ने 'हिंदू' की व्याख्या करते हुए कहा था,

'मैं अखिल विश्व का गुरु महान,
देता विद्या का अमर दान..
..होकर स्वतंत्र मैंने कब चाहा है
कर लूँ जग को गुलाम..

''भू-भाग नहीं शत-शत मानव के हृदय जीतने का निश्चय''

पूज्य गुरुदेव ने मोदी जी को 'विश्वहृदय चक्रवर्ती सम्राट' के रूप में अलंकृत किया है और विश्वपटल पर मोदीजी की अनन्य स्वीकार्यता देखते हुए यह कितना सही भी है और अंतिम पंक्तियाँ तो भाव-विभोर कर देने वाली हैं :

'तुम मम सखा भरत सम भ्राता'
'सदा रहेहु पुर आवत जाता'

इनको पढ़ते ही हनुमान जी के सामने साष्टांग दण्डवत् करने वाली और अवधपुरी की रज को मस्तक पर लगाने वाली छवि चरितार्थ हो जाती है।

पूज्य गुरुदेव का यह पत्र आगे जाकर एक ऐतिहासिक दस्तावेज बन जाएगा। इस एक छोटे-से पत्र में पूज्यश्री ने करोड़ों भारतवासियों की भावना उन शब्दों में व्यक्त कर दी है, जो हम जैसों के लिये तो असम्भव ही थी।

इस अद्‌भुत पत्र के लिए पूज्य गुरुदेव के चरणों में वंदन। – सद्गुरुचरणाश्रित **गिरीश डागा**

राम मंदिर शिलापूजन पर श्रद्धालुओं की प्रतिक्रियाएं

परम पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी महाराज,

सादर प्रणाम।

दिनांक ५ अगस्त २०२० को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के तत्त्वावधान में श्रीरामजी के भव्य, दिव्य, विशाल मंदिर निर्माण निमित्त शिलान्यास के शुभ मुहूर्त पर आप, न्यास के कोषाध्यक्ष तथा ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ संत के नाते संपूर्ण पूजन शास्त्रोक्त विधि से संपन्न हो, इस निमित्त पूजन कराने वाले आचार्यजी को जिस तन्मयता व सक्रियता से यथोचित मार्गदर्शन कर रहे थे; यह देखकर हम सभी भावविभोर हो रहे थे कि हमारे स्वामीजी, प्रधानमंत्री व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संघचालक के समक्ष हिमालय जैसे विशाल कार्य के प्रति अपने कर्तव्य एवं दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं।

आप जैसे मूर्धन्य संत बिरले ही होते हैं, जो साधारण कार्यकर्ता की भाँति कार्य में संलग्न रहते हैं। मुझे लग रहा था, आपके मार्गदर्शन को देखकर आदरणीय प्रधानमंत्रीजी, मोहनजी भागवत तथा पूजन में सहभागी बंधु-भगिनी अत्यन्त प्रसन्नचित्त हो रहे थे।

विधिवत् पूजन कराने वाले वाराणसी के प्रसिद्ध विद्वान थे; पर कहीं भी किसी प्रकार की किंचितमात्र भी भूलवश त्रुटि न रह जाये, इसलिए आप पूर्णरूपेण सजग एवं सक्रिय रहकर आवश्यकतानुसार निर्देशन कर रहे थे। यह देखकर हम आनंदित हो रहे थे।

आप कुण्ड से पूजन की कुछ सामग्री निकालकर पूजन हेतु प्रधान मंत्रीजी को दे रहे थे। उस समय संघचालकजी आपके सन्निकट बैठकर हर्षित हो रहे थे।

इस अनुष्ठान में प्रिय प्रधान मंत्रीजी को भारतीय गणवेश में पूजन करते हुए, मंदिरों तथा संत-महात्माओं को दंडवत प्रणाम करते हुए देखकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही थी। यह भारतीय संस्कृति का उत्कृष्ट उदाहरण था। पूजन के दौरान भी प्रधानमंत्रीजी पूर्ण धार्मिक परंपराओं के अनुसार एकाग्रता से पूजन कर रहे थे।

अंत में परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है- हमारे स्वामीजी सदैव पूर्ण स्वस्थ रहते हुए शतायु से अधिक वर्षों तक कपिवर हनुमानजी की भाँति निरंतर वेद-सेवा के साथ-साथ सनानत धर्म के उत्थान एवं राष्ट्र समृद्धि के लिए कार्य करते रहें।

विनम्र

रामेश्वरलाल काबरा

आज का दिन हम सबके लिये अतिशय महत्त्वपूर्ण है, ऐतिहासिक है, भारतीय अस्मिता का प्रतीक है। हमारे प. पू. गुरुदेव वर्षों से हर कथा में संकल्प किया करते थे।

मंदिर वहीं बनायेंगे, मंदिर भव्य बनायेंगे।

आज वर्षो का संकल्प पू. गुरुदेव के हाथों ही पूर्ण हुआ। आदरणीय मोदी जी का भी संकल्प था। ऐसे कितने ही लोगों का संकल्प होगा।

गुरुदेव हमेशा कहते रहे, सच्चे मन से सत्य संकल्प करते रहे, ऐसे संकल्प भगवान को पूरा करना पड़ता है। राम मंदिर के शिलान्यास के लिए मोदी जी तथा गुरुदेव को साथ में बैठे पूजन करते देखा, तो अपने आप मन भावुक हो रहा था।

गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि कोटि प्रणाम ।

– श्रीमती प्रमिला ताई माहेश्वरी

'भूमिपूजन' के अवसर पर संपन्न कार्यक्रम में पूज्यवर द्वारा बरती गई सजगता एवं समय-समय पर, आपके द्वारा, वहाँ उपस्थित पंडित वर्ग को दिए जाने वाले महत्त्वपूर्ण निर्देशों को स्वयं प्रधानमंत्री महोदय द्वारा भी 'नोटिस' में लिया गया।

सोचता हूँ, यदि आज इस आंदोलन के प्रणेता मा.सिंहलजी होते, तो वे भी पूज्यवर के समान ही सजगता बरत कर इस कार्यक्रम को पूर्णत: निर्दोष रूप से पूर्ण करवाते।

संपूर्ण देश में फैले हम सभी भक्त गर्व से आल्हादित हैं।

– भालचन्द्र व्यास, अजमेर

लालनलीला

छंद – मत्तगयंद सवैया
(''को नहिं जानत है जग में..'')

नाथ सनाथ किये वसुधा तनु मानुष ले धनु हाथ उठायें।
मारि दशानन मुक्त किये सिय भल्लुक-वानरयूथ जुटायें।।
ध्वस्त रिपुमद धर्म निरापद सत्त्व जयी खल तामस हारे।
रामकथामृत की लत लागि, लगे अब तो रस नीरस सारे -१

नाभिसरोरुह नित्यविराजित है जिनके अज आत्मज प्यारे,
वे हि बने शिशु आज अजात्मज के घर में हरि पालनहारे।
चार भुजा न सहै जननी, कहती तनु मानुष ही मन भावै।
ब्रह्म धरै नरदेह, रमावर भक्त-अधीन सुधीजन गावै-२

वेद भये मुख से जिसके अब बोलत है वह तोतरि बोली।
जो सनकादिकमंडलमंडित खोलत लेकर बालक-टोली।।
अंबर-वायु-हुताशन-नीर-धरी जिसने हर हाल संभाली।
भूमि गिरे कर यत्न उठे अब लाल से जायें न चाल संभाली-३

श्यामल कोमल गात छवि, चलते हिलती गल मौक्तिकमाला।
संतन के मनमंदिर गूंजत रामलला तव लालनलीला।।
दौड़ लगा चहुं ओर रही सुविभोर निहारि छवि सुख पाऊं।
पांव बंधी सुन पायल की धुन लौट नहीं फिर देह में आऊं-४

ब्रह्म परात्पर नित्य सनातन है बिनती यह बोध गंवाओ।
संप्रभुता कर आज विसर्जित बाल बनो फिर गोद में आओ।।
भूल सभी महिमानहिमालय राघव लाघव ओढ़ के आओ।
नाथ गहो मम हाथ करो हठ और कहो अब लाड लडाओ-५

रामलला निजधाम पुनः अवधेश्वर सज्जनपालक आयें।
आज सुनी बिनती प्रभु ने रघुनायक वे बन बालक आयें।।
सुंदर श्यामल रूप वहीं शर-चाप लिये कर चारु बिराजे।
संतन के उरवास निरंतर वत्सलतावश ऊरु बिराये-६

आतुर आज चकोर सियावर, संतसमागम चंद्रकला है।
राम के काज को आतुर दास के पास निरंतर रामलला है।।
भक्त अकिंचन भावुक लोचन नीर भरे रघुवीर निहारे।
योग न, याग न, या व्रतपालन, लालनभाव से राघव हारे-७

सज्जनमानसहंस विभाकस्वंशविभूषण सोहत कैसे?
भोर की गोद में भानु किशोर दुकूल लिये नवनीरद जैसे।
अमृतपान में ध्यान कहाँ? सुर लालनभाव के पान में खोयें।
वेद खड़े कर रिक्त लिये, निजभक्त की गोद में राम समायें-८

– प्रणव जनार्दन पटवारी

दुर्लभ साथी

क्या? कैसे मैं लिखूँ परमप्रिय, जाधव सर के बारे में?
हाथ काँपता, गला रूँधता, खोते ही उन यादों में।
विश्वसनीय पराकाष्ठा के, संयत सात्त्विक कण-कण में
कभी न सोचा था ये साथी, बिछुड़ चलेंगे अध-मग में ।।१।।

धर्मोत्साह-विनय की मूर्ति, सेवातत्पर सदा रहे
युद्धकला में परमनिपुण पर, सूक्ष्म योग में रमे रहे।
समाजसेवा-गोसेवा की, ललक सदा रहती मन में
भारतमाता के भविष्य का, उज्ज्वल स्वप्न खुले दृग में ।।२।।

गंगातटपर योगनिरूपण, करके पाठ पढ़ाये जो
दुर्लभतम अनुभूत ज्ञान का, खोल खजाना बैठे ज्यों।
स्वभाव बालक-सा था उनका, प्रभाव योगाचार्य सम
धन्य हुआ हर जिज्ञासु, गुरुदेव बनाते आत्म-सम।।३।।

कैसे? कहाँ खोजकर भी अब ऐसे साथी मिलने हैं?
इतने सुंदर संस्कारों में कौन युवा अब ढलने हैं?
यह विचार आते ही गीता-नाद जगा मेरे मन में
जाधव सर फिरसे आएँगे पहुँचाने गीता जग में...।।४।।

स्वामी गोविंददेवगिरि

करादे स्पर्धा का उद्घाटन करते 'सर'के साथ में श्री बाला सा. थोरात, श्री ओंकारनाथ जी मालपाणी एवं डॉ. संजय मालपाणी

निष्काम महायोगी सुरेश जी जाधव सर

– डॉ. संजय मालपाणी
(राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, गीता परिवार)

दो दिनों में पेट में लगभग सभी अंग निष्क्रिय हो चुके थे। ऐसी अवस्था में भी वे पूर्ण जाग्रत थे। हम सभी चिंताक्रांत थे; परंतु उनके चेहरे पर वही शांत-सौम्य भाव थे। यही एक महायोगी का परिचय था। मृत्यु के किनारे बैठकर भी मन में समत्व का भाव होगा, तभी चेहरा सौम्य-शांत हो सकता है।

सन् १९८८ में संगमनेर में तृतीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन था। बालकों को नियुद्ध (कराटे) की शिक्षा देने हेतु सातारा से एक युवा प्रशिक्षक आयेंगे, ऐसा पू. स्वामी जी ने बताया था। सातारा से संगमनेर का लगभग २५० किलोमीटर प्रवास अपनी बुलेट पर कर जाधव सर संगमनेर पहुंचे। कंधे तक लंबे बाल, परिश्रम से प्राप्त शरीर संपदा, हर शब्द में धार, ऐसे जाधव सर का वह पहला परिचय आज भी मेरी स्मृति में है। पू. स्वामी जी के प्रति संपूर्ण समर्पण का भाव उनके हृदय में सदैव था। अपने पेट पर लकड़ी टूटने तक प्रहार झेलना, एक साथ आठ-दस खपरेल तोड़ना, तीन युवकों का वजन लिए बुलेट को अपने पेट के ऊपर से चलवाना, ऐसे अचंभित करने वाले शक्ति के प्रयोग, वे जब करते, तब बच्चे उनके दीवाने हो जाते थे।

इस शिविर के बाद प्रतिवर्ष जाधव सर शिविरों में आने लगे। पू. स्वामीजी से योग-प्राणायाम तथा ध्यान-धारणा की शिक्षा पाने लगे। उनकी श्रद्धा ऐसी थी कि एक बार स्वामी जी ने बता दिया, तो वह कार्य किसी भी हालत में पूर्ण करते थे। अष्टांग योग के मार्ग पर वे इतने आगे बढ़े कि बीड़ के शिविर में मख्खियों से भिनभिनाते मंदिर में लगभग पाँच-छ: घंटे उन्हें ध्यानस्थ देखकर, उनकी अष्टांग योग की गति सहज समझ में आती। श्रद्धा के साथ सद्गुरु की राह पर चलने से जीवन में क्या परिवर्तन आता है, इसका सर्वोत्तम उदाहरण जाधव सर थे।

शक्ति और भक्ति के साथ देश कल्याण :

शक्ति और भक्ति साथ में हो, तो ही राष्ट्र आगे बढ़ेगा, यह उनकी धारणा थी। अत: जहाँ भी वे जाते, अपने एक विद्यार्थी को वहीं पर कराटे की क्लास हेतु नियुक्त करते। उनके कराटे प्रशिक्षण की विशेषता थी कि कक्षा आरंभ होने से पहले प्रार्थना, अंत में प्रणवोच्चार-ध्यान नियम से होता था। जब भी वे स्वयं परीक्षा लेने हेतु तीन-चार महीने में एक बार उस कक्षा

९वीं राज्यस्तरीय कराटे स्पर्धा – संगमनेर

में जाते, तब बच्चों को भारतीय संस्कृति और योग विद्या से अवगत कराते। अपने छात्रों से वे देश, देव तथा धर्म सेवा की अपेक्षा रखते। नियुद्ध तथा स्वसंरक्षण गीता परिवार का अभिन्न अंग बना, तो केवल जाधव सर के कारण।

जैसे–जैसे योग साधना में वे आगे बढ़े, वैसे–वैसे वे कहते कि योग शिक्षा ही हमारे कल्याण का एकमात्र साधन है। आसन–प्राणायाम–प्रत्याहार–धारणा और ध्यान की विद्या सिखाना अनिवार्य होना चाहिए। इसके लिए आवश्यक यम–नियमों का पालन कैसे हो, योगमय दिनचर्या कैसी हो, इस बात पर स्वयं के आचरण से उदाहरण प्रस्तुत करते थे।

'गीता परिवार' उनका श्‍वास था। स्वामीजी के इस कार्य में उनकी निष्ठा ऐसी थी कि जहाँ भी इस कार्य हेतु जाने की आवश्यकता पड़ती, वे निरपेक्ष भाव से पहुँचते। एक बार नासिक से कोलकाता जाने वाली रेलगाड़ी छूट गई थी। शिविर होना ही चाहिए, यह सोचकर, सर संगीता दीदी और आफले महाराज लगभग ४० घंटे का प्रवास मेटाडोर गाड़ी से कर कोलकाता पहुँचे। इस लंबे कष्टप्रद प्रवास का नेतृत्व जाधव सर द्वारा किया गया। ऐसे अनेक शिविरों में जाधव सर साथ में थे। उनकी अर्धांगिनी संगीता दीदी भी इन ३० वर्षों के प्रवास में सदैव उनके साथ रहीं। पुत्र मिहिर एवं पुत्री भुवनेश्वरी भी गीता परिवार का अभिन्न अंग बन गए। जाधव परिवार और गीता परिवार का एक अटूट आत्मीय संबंध था और रहेगा।

प्रज्ञा संवर्धन योग :–

जब भी वे संगमनेर आते, तो हम घंटों बातें करते। एक दिन सहज ही मैंने बालकों के गणित की कक्षा में चित्र निकालने की बात कही। उन दिनों 'मिड ब्रेन ॲक्टिवेशन' का एक कार्यक्रम मैंने देखा था। योगशास्त्र में ऐसी कोई विद्या है क्या, यह मेरा प्रश्न था। अपनी सहज शैली में उन्होंने मुझे चंद्र–सूर्य नाड़ी और सुषुम्ना नाड़ी के क्रियान्वयन के साथ ज्ञानेंद्रियों को विकसित करने के लिए योगशास्त्र में उपलब्ध प्रयोग बताना आरंभ किया। मैंने तुरंत अगले दिन सर के एक सत्र का आयोजन ध्रुव ग्लोबल स्कूल में किया। इस सत्र के प्रयोग लिखने का कार्य गिरीशजी डागा को सौंपा गया। सर से प्रदीर्घ चर्चा कर यह पुस्तिका तैयार की गई। शिक्षा के क्षेत्र में आमूलाग्र चमत्कार दिखाने वाले यह प्रयोग '**प्रज्ञा संवर्धन योग**' नाम से सुविख्यात हुआ।

गीता का कंठस्थीकरण करते समय '**अपाने जुह्वति प्राणं**' (४–२९) इस श्लोक में अपान वायु की आहुति प्राणवायु में देने के बारे में कहा गया है। मुझे उत्सुकता थी कि यह कैसा प्राणायाम है? इस विषय में जाधव सर से पूछा, तो उन्होंने मुझे कुछ ऐसे प्राणायाम करके दिखाए कि मैं अवाक् रह गया। हमने

नौवली तो देखी है, जिसमें पेट दंडाकृति (Vertical) घुमाया जाता है। सर ने मुझे पेट को ऊपर से नीचे (Horizental) घुमाकर दिखाया। फिर क्रमशः अधमोदर, मध्योदर और उर्ध्वोदर प्राणायाम क्रिया दिखाते हुए आपने अपान वायु को ऊपर उठाने की विधि दिखाई और हंसते हुए कहा, 'मेरे साथ एक महीना रहोगे तो आप भी यह कर पाओगे।'

समत्वं योग उच्चते :–

अंतिम क्षणों में जब मैं उनसे मिलने सोलापुर अस्पताल में गया, तब घातक विषाणु के संसर्ग से मात्र दो दिनों में पेट में लगभग सभी अंग निष्क्रिय हो चुके थे। ऐसी अवस्था में भी वे पूर्ण जाग्रत थे। हम सभी चिंताक्रांत थे; परंतु उनके चेहरे पर वही शांत-सौम्य भाव थे। यही एक महायोगी का परिचय था। मृत्यु के किनारे बैठकर भी मन में समत्व का भाव होगा, तभी चेहरा सौम्य-शांत हो सकता है।

हम सब के अग्रणी आदरणीय जाधव सर का अकस्मात् जाना केवल 'गीता परिवार' की नहीं; अपितु विश्व की दृष्टि से भी अपरिमित क्षति है।

तीन दशकों से अधिक समय तक तन-मन-धन और जीवन निरपेक्ष भाव से गीता परिवार को अर्पित करने वाले हम सब के मार्गदर्शक, गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रद्धेय महायोगी जाधव सर को भावभीनी श्रद्धांजलि....

बारबार अंतिम प्रणाम करता आपको मन,
हे दिव्य योगात्मा गीता परिवार रत्न।
व्याप्त हो गए जन-मन में देकर प्रज्ञासंवर्द्धन,
नव प्रकाश बन, आलोकित कर नव जग-जीवन!
बारबार अंतिम प्रणाम करता आपको मन।

श्रीमती लताजी चन्द्रकान्त केले, धुलिया के आकस्मिक निधन पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

दीपक जिस प्रकार मौन रहकर प्रकाश बिखेरते रहता है, हिमगिरि जिस प्रकार स्वयं को गला कर जीवन-दायीनी जलप्रवाह का सृजन करते रहता है, इसी प्रकार लता ताई उर्फ केले काकी भी मौन-साधना करने वालीं एक व्यक्ति थीं। शालीनता, सात्त्विकता और ममता का जीवंत उदाहरण थी लता काकी!

धुलिया के समाज-जीवन में अत्यंत सक्रिय रहने वाले आदरणीय केले काका की अर्धांगिनी के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वाह वे पूरी तन्मयता और प्रसन्नता से करती रहीं। केले काका की यशोगाथा में काकीजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

केले काका के हर कार्य में काकी बिना किसी शिकायत और अपेक्षा के उनके साथ खड़ी रहीं। जहाँ कहीं भी आवश्यकता पड़ती, उस कार्य का उत्तरदायित्व काकीजी स्वयं ले लेतीं।

अपने ही आंगन में उन्होंने वेद पाठशाला का आरंभ किया, अनेक भव्य कथा-प्रवचनों के आयोजन किये। अनेक शिविरों में प्रसन्नता और उत्साह के साथ कार्य करते हुए हम सबने उन्हें देखा है।

ममता से भरी हमारी ये ''माँ'' यूं अचानक हमें छोड़कर दिव्य-यात्रा के लिए चली जाएंगी, यह कल्पना से भी परे है। धर्म पर आधारित पुरुषार्थी जीवन की यात्रा मोक्ष के गंतव्य पर ही पहुँचती है। लता काकी की जीवन-यात्रा धर्म, अध्यात्म और भक्ति-भाव से समृद्ध रही।

धर्मश्री के आंगन का एक दीप भले बुझ गया हो, किन्तु आकाश में एक नए तारे का उदय भी तो हुआ है। वहाँ से भी वे हमें ऊर्जा देती रहेंगी, क्योंकि 'देते रहना' उनका स्वभाव ही है।

लता ताई, आपको हम भुला नहीं पाएँगे। अश्रु-पुष्पों का हार आपके चरणों में समर्पित।

– सौ. वीणाताई दाढे, पुणे

गुरुजी ने पूछा ''क्या इच्छा है आपकी?'' और मेरे मुख से निकला ''बस, इतना ही आशीर्वाद दीजिये कि ये मेरा आखिरी जन्म हो।'' गुरुजी ने तब अत्यंत स्पष्टता से कहा था कि ''स्वयं का मोक्ष यही एकमेव उद्देश्य नहीं होना चाहिए। अपने जीवन का उपयोग दूसरों के लिए हो, यही विचार अधिक महत्त्वपूर्ण है।''

प. पूज्य गुरुदेव के साथ मेरा जीवन प्रवास

– स्मृति शेष श्री सुरेश सदाशिव जाधव

प.पूज्य गुरुजी का प्रथम दर्शन मैंने २५ मई १९८६ को सातारा शहर में आयोजित बालिका संस्कार शिविर में पाया। प्राचीन ग्रंथों के कुछ श्लोक और प्रसंगों का आधार देकर हम ये बता रहे थे कि भारत में निःयुद्ध कला कितनी प्राचीन है और उस समय पूज्यवर दूर से ही हमारा अवलोकन कर रहे थे। बाद में उन्होंने हमें बुलाकर हमसे अधिक विस्तृत चर्चा की। वार्तालाप में उन्हें ये पता चला कि मेरा जन्मदिन भी इन्हीं दिनों में है और फिर उस शिविर में भारतीय पद्धति से मेरा जन्मदिन मनाया गया। इस प्रकार पूज्य गुरुजी का प्रथम आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

प.पू. गुरुदेव के साथ जाधव सर जिनकी अब केवल स्मृतिशेष है।

मेरे बाल्यकाल में परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होते हुए भी सीखने की मेरी इच्छा निरंतर बनी रहती थी। शालेय और महाविद्यालयीन शिक्षण पूर्ण करने के लिए मुझे नौकरी करनी पड़ती थी। ऐसी ही एक नौकरी मैंने एक पुस्तकालय में की थी। अध्ययन में तो मेरी रुचि पहले से ही थी. अब पुस्तकों का साथ मिल जाने से मेरी ये नौकरी भी बड़ी आनंदमयी हो गई। इसी पुस्तकालय में १३-१४ वर्ष की आयु में मैंने स्वामी विवेकानंद का संपूर्ण साहित्य पढ़ा। उनकी 'राजयोग' पुस्तक का मुझ पर विशेष प्रभाव पड़ा। स्वामी विवेकानंद अब मेरे आदर्श बन चुके थे और प्रथम दर्शन में ही पूज्य गुरुदेव में मुझे स्वामी विवेकानंद के ही दर्शन हुए। शुभ्रवेशधारी ३८ वर्षीय युवा, ब्रह्मतेजयुक्त, चुस्त और गतिशील.. राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत, धर्मनिष्ठा से भरे ... प्रथम दर्शन में ही सम्मोहित कर देने वाला पूज्य गुरुजी का वह स्वरूप आज भी मेरी आँखों के सामने है।

नरेन्द्र अर्थात स्वामी विवेकानंद के जीवन में घटी एक घटना संयोग से सातारा में मेरे साथ घटी। शिविर समापन पर गुरुजी के कक्ष में मैं उनके सामने अकेला बैठा था। अत्यंत प्रेम से देखते हुए गुरुजी ने पूछा, ''क्या इच्छा है आपकी?'' और मेरे मुख से निकला ''बस, इतना ही आशीर्वाद दीजिये कि ये मेरा आखिरी जन्म हो।'' गुरुजी ने तब अत्यंत स्पष्टता से कहा था कि ''स्वयं का मोक्ष यही एकमेव उद्देश्य नहीं होना चाहिए। अपने जीवन का उपयोग दूसरों के लिए हो, यही विचार अधिक महत्त्वपूर्ण है।'' फिर से एक बार ऐसा लगा कि जैसे मैं साक्षात् स्वामी विवेकानंद के सामने ही बैठा हूँ। बस, मेरा निश्चय हो गया कि अपना जीवन दिव्य बनाने के लिए पूज्यवर

थे। तब मैं शिविरार्थियों के कक्ष के द्वार पर सोता था। गुरुजी के प्रवेश पर जाग्रत होते हुए भी मैं सोने का नाटक करता था; ताकि वे मेरे नजदीक आयें। और जैसे ही वे मेरे नजदीक आते, मैं उनके चरणों में मस्तक रख देता। उनके एक-एक स्पर्श से ही मुझे जीवन भर की प्रेरणा, योग-साधना की प्रगति और पारलौकिक जगत की तरफ मेरा प्रवास, ये सब कुछ प्राप्त होता गया।

ही एकमात्र मार्गदर्शक हैं।

संयोगवश इसी प्रकार का प्रसंग संगमनेर में संगीता के साथ घटा। शिविर समापन पर कार्यकर्ताओं का सत्कार करते हुए गुरुजी ने संगीता से पूछा, ''तुझे क्या चाहिए?'' इस पर संगीता बोली कि सामान्य वस्तु नहीं, मुझे मोक्ष चाहिए।'' पूज्यवर ने हँसते हुए कहा कि वह बाद की बात है, अभी ये ले लो और उन्होंने संगीता को एक पुस्तक प्रसाद रूप में दी।

गीता परिवार की स्थापना हुई ही थी और पूज्य गुरुजी के निर्देश पर हम दोनों गीता परिवार के कार्य में तन-मन-धन से जुट गए। तब गुरुजी स्वयं प्रत्येक शिविर में उपस्थित रहते थे। इसलिए उनके श्रीमुख से प्रवचन सुनते हुए, शिविर संयोजन और सञ्चालन की बारीकियाँ उनसे सीखते हुए शिष्य और कार्यकर्ता के रूप में हमारा जीवन आकार ले रहा था। उस समय गुरुजी के प्रतिपल दर्शन और उनके चरणस्पर्श की लालसा बड़ी तीव्र रहती थी और उतनी ही आज भी बनी हुई है।

प्रारंभिक शिविरों में पूज्य गुरुजी प्राय: स्वयं प्रात:जागरण के लिए मंगलस्मरण के श्लोकों का उच्चारण करते हुए प्रत्येक कक्ष में जाते

पीछे मुड़कर देखते हुए अब कभी जब मैं अपने पूर्व व्यक्तित्व के बारे में मैं सोचता हूँ, तो अचंभित रह जाता हूँ कि इतनी आसानी से पूज्य गुरुजी ने कार्यकर्ता के रूप में मुझे स्वीकार कैसे कर लिया!! बाल्य तथा किशोरकाल गोवा में व्यतीत होने के कारण मेरी बाह्य वेश-भूषा और वर्तन पर पाश्चात्य प्रभाव था। कंधे तक बढ़े हुए - खुले बाल, शर्ट के तीन बटन खुले, गले में शंख-मणि की माला, कान में कर्णफूल, शर्ट का अंतिम बटन लगाने की बजाय गाँठ बाँधी हुई.. इसी प्रकार के हिप्पी वेश में पहले के एक-डेढ़ वर्ष मैं रहता था। संगीता भी शर्ट-पेंट, बालों का बॉब-कट, इस

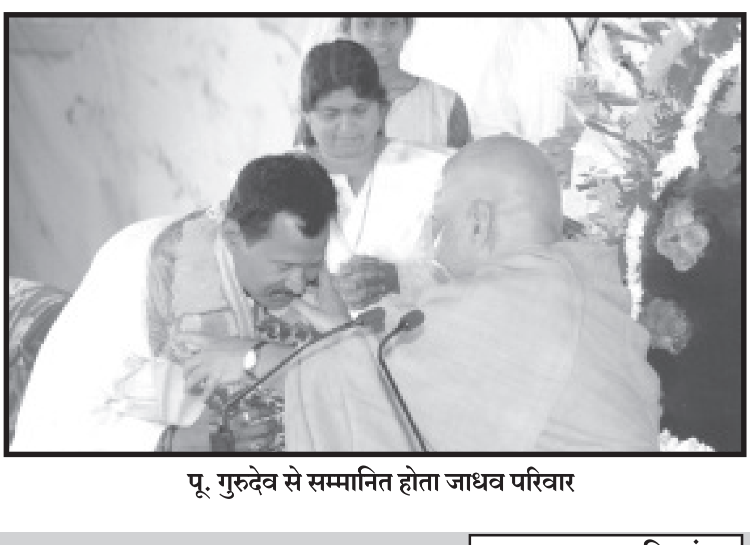

पू. गुरुदेव से सम्मानित होता जाधव परिवार

प्रकार के आधुनिक परिधान में रहती थी; किंतु पूज्य गुरुदेव ने एक बार भी हमें टोका नहीं और न ही कभी हमारी उपेक्षा की।

आगे जाकर गुरुजी अन्य कार्यो में व्यस्त होते गए, शिविर में अब वे पहले की तरह पूर्ण समय नहीं रहते थे। और शिविर सञ्चालन की जिम्मेवारी अब हम तीन युवा कार्यकर्ताओं पर आ गई थी। मैं, संगीता और हमारे वर्तमान कार्याध्यक्ष संजय जी मालपाणी।

गीता परिवार के संस्कार शिविर में सदैव सेवारत जाधव सर का सम्मान

१९९१ में संगीता और मेरा विवाह संपन्न हुआ। १९९३ में श्रीमद्भागवत कथा के लिए पूज्यवर सोलापुर पधारे। शहर में श्री विपिनभाई पटेल के घर उनकी निवास व्यवस्था थी। मेरी गृहस्थी देखने पूज्यवर मेरे घर पधारें, ऐसी प्रबल इच्छा मेरे मन में थी; किंतु लोगों की भीड़ और उनके कार्य की व्याप्ति, व्यस्तता को देखते हुए मैं उन्हें कष्ट नहीं देना चाहता था। शाम के समय अनेक भाविक उनके दर्शन करने आते और उन्हें अपने घर पधारने का आमंत्रण देते। एक दिन अचानक गुरुदेव ने कहा, ''सब बुला रहे हैं; लेकिन मेरा सुरेश मुझे कब बुलाएगा?'' मुझे याद है यही उनका पहला और अब तक का मुझे मेरे नाम से पुकारने का एकमात्र प्रसंग है। वरना वे मुझे 'सर' या 'जाधव सर' और अब 'योगाचार्य' नाम से ही संबोधित करते हैं। उस समय पूज्यवर मेरे घर पधारे। मेरी गृहस्थी को उनकी चरणधूलि लगने से ही भविष्य में मेरा स्वयं का घर बना। आगे जाकर फिर से जब पूज्यवर सोलापुर पधारे, तब वे हमारे छोटे-से घर में ही ठहरे थे। मेरे छोटे से घर में बहुत ज्यादा सुविधाएँ न होते हुए भी, पूज्यवर ने मेरे यहाँ निवास करके मुझे कृतार्थ कर दिया था। मेरे लिए तो ये भी एक बहुत बड़ा आशीर्वाद था।

आखिर वह दिन आया : मेरी दीक्षा

इस प्रकार बाल संस्कार कार्य के कारण गुरुजी से निरंतर संपर्क बना रहा। मेरी श्रद्धा उनके प्रति प्रतिक्षण बढ़ती गयी। तब 'गुरु' के रूप में मैंने समर्थ रामदास स्वामी को पहले ही स्वीकार किया हुआ था। १९८८ में स्वप्न दृष्टांत में अग्निकुंड से दर्शन देकर अपने हाथ के योगदंड से मेरे दाहिने हाथ को छूकर उसी योगदंड से दिखाते हुए समर्थ रामदास स्वामी ने कहा कि ''तुम्हारा खाता उनके पास है, वहाँ जाओ।'' मैंने उस ओर देखा, तो अक्कलकोट के स्वामी समर्थ के दर्शन हुए। मेरी तरफ दृष्टि डालते हुए उन्होंने कहा, ''सिर्फ नामस्मरण से क्या होता है?'' इतना तो कहा; किंतु क्या करना चाहिए, ये नहीं बताया। उसी क्षण से मेरी साधना अत्यंत तीव्र हो गयी और बढ़ती ही गयी। साधना के समय कभी माँ दुर्गा, कभी हनुमानजी, तो कभी राम जी के दर्शन होने लगे। सन् २००० में एक अद्‌भुत घटना साधना-काल में ही घटी। दो बार स्वामी समर्थ महाराज ने दर्शन देते हुए स्पष्ट कहा कि अब मुझे पूज्य गुरुजी से स्पष्ट मार्गदर्शन लेना चाहिए। ध्यान में अवतार परंपरा दिखाते हुए उन्होंने कहा कि, ''श्री दत्त। श्रीपाद श्रीवल्लभ। श्री नृसिंह सरस्वती। वे स्वयं और वर्तमान में स्वामी गोविंददेवगिरि जी!'' इसके बाद मानस पूजा, बिंदु दर्शन और नाद-अनुसंधान की साधना में श्री स्वामी समर्थ

के साथ-साथ पूज्य गुरुजी के दर्शन भी होने लगे। अगले एक साल तक इसी प्रेम और आनंद में मैं डुबकियाँ लगाता रहा।

फिर वह दिन आया- ३० मई २००३, हृषिकेश – निमित्त था गीता साधना शिविर – सूर्यग्रहण के दिन गंगा मैया के पावन तट पर मुझे इस जन्म के सदेह सद्गुरु की प्राप्ति हुई। १७ वर्षो की साधना रंग लायी। दीक्षा के लिए उस दिन गुरुजी के सामने लंबी कतार थी। जब मेरा नंबर आया, तब गुरुजी ने कहा कि सबसे आखिर में आना। और फिर सबके चले जाने के बाद गुरुजी ने मुझे सामने आकर बैठने को कहा। उनके सामने बैठते ही मुझे कुछ होने लगा। मेरे पूरे शरीर में जैसे विद्युत प्रवाह दौड़ने लगा। सहज होने का बहुत प्रयास करने के बाद भी मैं सहज नहीं हो पाया। भ्रूमध्य में तीव्र गति से प्राणों का प्रवाह होकर मस्तिष्क के ऊपर सहस्रार तक जोरों से ऐसे घूमने लगा मानो सुदर्शन-चक्र घूम रहा हो। संपूर्ण देह में कंपन होने लगा। गुरुजी ने तुरंत अपने दाहिने हाथ का अंगूठा मेरे, भूमध्य में रखकर दबाया। उनके स्पर्श मात्र से मेरे मस्तिष्क में प्रकाश के अनगिनत स्फोट होने लगे और शीघ्र ही सारा मस्तिष्क तीव्र शुभ्र प्रकाश से भर गया। शब्दों में वर्णित नहीं हो सकता, ऐसा आनंद अनुभव हो रहा था। इसी आवेग में मैंने अपने आपको गुरुजी की गोद में झोंक दिया। उनके घुटनों पर सिर रखकर खूब आनंद से रोमांचित होकर मेरी आँखों से अश्रुधार बह चली। गुरुजी मेरी पीठ पर हाथ फेरते रहे। कुछ देर बाद देहभान आने पर मैं ठीक से बैठ गया। फिर गुरुजी ने मंत्रोपदेश दिया; किंतु यह तो अब औपचारिकता मात्र थी; क्योंकि मेरी शक्तिपात दीक्षा तो वे कर ही चुके थे। योगवासिष्ठकार लिखते हैं कि ''दर्शनात् स्पर्शनात् शब्दात् कृपया शिष्यदेहके, जनयेयः समावेशम् शाम्भवम् स हि देशिक:'' अर्थात् जिनके केवल दर्शन-स्पर्श-शब्द एवं कृपा से शिष्य के देह में शक्ति-संचार होता है, वही 'सद्गुरु' है। दीक्षा के समय मैंने यही अनुभव किया।

इसके बाद सन २००६ में साधना शिविर में ही हमारी पुत्री भुवनेश्वरी और पुत्र हेरम्ब को पूज्यवर का अनुग्रह प्राप्त हुआ। २००५ में हेरम्ब आठ वर्ष का हुआ और संगीता ने पूज्यवर से उसके मौंजीबंधन संस्कार की अनुमति मांगी। अत्यंत प्रेमपूर्वक गुरुजी ने कहा, ''हेरम्ब का उपनयन संस्कार मैं स्वयं करूँगा। उसे लेकर हृषिकेश आओ।'' १० मई को सभी शिविरार्थियों की उपस्थिति में जनेऊ धारण कर हेरम्ब ने पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त किया। उस दिन शिविर का वातावरण भावुक हो गया था। आज भी शिविरार्थी उस दिन को याद करते हैं। हमारे जीवन का तो ये एक अविस्मरणीय प्रसंग है ही; किंतु ये उन लोगों के लिए भी एक संदेश है, जो दुष्प्रचार करते हैं कि इस देश का ज्ञान ब्राह्मणों ने छुपाकर रखा अथवा उन्होंने अन्य जाति वालों को आगे बढ़ने के अधिकार नहीं दिए। जाति से ब्राह्मण न होते हुए भी, मेरे बेटे का उपनयन संस्कार कर पूज्यवर ने वे सभी अधिकार स्वयं प्रदान किये। पूज्यवर ने एक महान सामाजिक क्रांति का बीजारोपण भी अपने इस कार्य के माध्यम से किया।

हमारी पहली संतान भुवनेश्वरी के जन्म से पूर्व ही हमने उसे पूज्य गुरुजी को समर्पित करने का निश्चय कर लिया था। आज भी पूज्यवर जब-जब ये कहते हैं कि 'भुवनेश्वरी तो मेरी बेटी है। जाधव सर और संगीता ने इसे मुझे दे दिया है', तब-तब गुरुजी के ये उदगार सुनकर मन ही मन हम कहते हैं कि केवल भुवनेश्वरी ही नहीं, हमारा पूरा परिवार ही आपको समर्पित है। गृहस्थ धर्म का पालन करते हुए लौकिक और आध्यात्मिक जीवन में हमने जो भी प्रगति की है, वह केवल पूज्यवर के आशीर्वाद के कारण उनकी कृपा-दृष्टि के बिना ये संभव नहीं था।

अवगुणों से भरे व्यक्ति को भी गुणाधिष्ठित करके सार्वजनिक कार्य में क्रियाशील करने वाले, सभी वांछित मनोकामनाएं पूर्ण करने वाले स्नेहहृदयी, दयालु, निर्धारी, अमोघ वाणी के अधिकारी, ज्ञानवान, तेजवान ऐसे हमारे सद्गुरु को प्रभु श्रीराम निरामय स्वस्थ दीर्घायु प्रदान करें, यही प्रार्थना है।

शक्ति-भक्ति और योग के अद्‌भुत संगम आदरणीय जाधव सर

– महेंद्र काबरा

आदरणीय सुरेशजी जाधव सर से मेरा प्रथम संपर्क १९९३ में भारत विकास परिषद्‌ द्वारा आयोजित बाल संस्कार शिविर के दौरान घाटकोपर में हुआ। बालकों पर शक्ति–संस्कार अर्थात शारीरिक प्रशिक्षण देने का कार्य वे बड़ी आत्मीयता एवं सजगता से करते थे। आगे कठोर साधना कर उन्होंने योग तथा प्राणायाम में महारत हासिल की। प्रज्ञा संवर्द्धन तथा ज्ञानेन्द्रिय विकास के क्षेत्र में उन्होंने अभूतपूर्व शोधकार्य किया।

पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी के प्रति उनकी गहरी श्रद्धा थी और पूज्य स्वामीजी द्वारा संचालित अनेक प्रकल्पों में वे अपनी सेवाएँ देते थे। विशेषकर‘गीता साधना शिविर’ तथा ‘गीता परिवार’ के लिए तो उन्होंने अविस्मरणीय कार्य किये। बच्चों के शरीर को व्यायाम तथा योगाभ्यास से सुगठित कर उन्हें संस्कारित करना यही उनका उद्देश्य था, जिसे वे ‘गीता परिवार’ के माध्यम से साकार करते रहे।

> युवाओं को संगठित कर उन्हें सकारात्मक समाज-कार्य तथा राष्ट्र-हित के लिए कैसे तैयार किया जाए, ये चिंतन उनके भीतर सदैव चलते रहता था। देश भर तथा विशेष रूप से महाराष्ट्र में फैली अपनी मार्शल आर्ट क्लासेस के माध्यम से वे युवा मन पर राष्ट्र-भक्ति का संस्कार डालते रहे।

ऋषिकेश में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले ‘गीता साधना शिविर’ में वे जिस तल्लीनता से योग साधना का प्रशिक्षण देते थे, वह तो अद्‌भुत था। आज भी हजारों साधक उनकी अनेक स्मृतियों को अपने दिल में कृतज्ञतापूर्वक संजोये हुए हैं।

वैसे तो जाधव सर प्रत्येक वर्ष मुंबई आते थे शिविर के लिए; किंतु गत वर्ष मीरा–भायंदर महानगरपालिका के शिक्षकों को नैतिक पाठ्यक्रम आयोजित चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में भी उनको आमंत्रित किया गया। इस शिविर में आपने नैतिक शिक्षा और योग– पद्धति के प्रात्यक्षिक के साथ इस तरह विश्लेषण किया कि उपस्थित सभी शिक्षक आपके प्रशंसक बन गए। वह अविस्मरणीय पल आज भी हमारे मन–मस्तिष्क पर छाया हुआ है।

शक्ति–भक्ति–योग के ऐसे अद्‌भुत संगम वाले प्रतिभा–संपन्न व्यक्ति का इस प्रकार हमारे बीच से असमय चले जाना एक बहुत बड़ी क्षति है। उनके अभियान को आगे बढ़ाते रहना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मैंने अपने पिता को खो दिया

स्व. शिहान श्री सुरेशजी जाधव सर वे व्यक्ति थे; जिन्होंने मेरे जीवन को आधार दिया। पिछले १९ वर्षों से उनसे प्रशिक्षण लेते हुए उनके अनेक रूप मैंने देखे हैं। सर एक श्रेष्ठ गुरु तो थे ही; किंतु अनेक बार उनके अंदर मैंने अपने पिता का रूप भी देखा। पिता के समान उन्होंने मुझे आधार दिया। जब मेरे गुरु दिनेश सागवेकर का निधन हुआ, तब सर ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे; जिन्होंने सहारा देकर मुझे अपने पैरों पर खड़ा किया। सर, मैं जीवन भर आपकी आभारी रहूँगी।

आप मेरे आदर्श थे और हमेशा मेरे आदर्श रहेंगे। आप गए और एक बार फिर से मैं ‘अकेली’ रह गयी। पिता को खो देने का एहसास फिर से एक बार हुआ है। आपको दिया हुआ वचन मैं पूर्ण करूँगी। आपसे प्राप्त शिक्षा और ज्ञान को मैं दूसरों तक पहुँचाती रहूँगी और अपने देश की सेवा करूँगी। आप हमेशा याद आएँगे, सर!

– हर्षल शिरवाडकर (‘दक डैन ब्लैक बेल्ट’, मुंबई)

जाधव सर : एक उत्तम गुरु !

– दत्ता भांदुर्गे, संगमनेर

आदरणीय स्व. जाधव सर से मेरा परिचय और उनका साथ २५ वर्षों का रहा। इन वर्षो में गीता परिवार के संस्कार कार्य, गीता साधना शिविर, नि:युद्ध स्पर्धाओं, सैनिक शिविरों के कारण देश के अनेक स्थानों पर सर के साथ प्रवास हुआ।

आदरणीय सर का आचरण, स्वभाव, संवाद करने का तरीका, उनकी वाणी सब कुछ एक योगी जैसी ही थी। अध्यात्म, शौर्य, योग–प्राणायाम के बारे में मैंने जो कुछ सीखा है, वह सब सर की ही देन है।

मुझे याद है जब सर सातारा सैनिक स्कूल में एडवेंचर कैम्प लेते थे, उस समय मुझे सर के अतिनिकट रहने का अवसर प्राप्त होता और सर का एक अलग ही रूप वहाँ देखने को मिलता था। उससे पहले मुझे ऐसा लगता था कि सर काफी गुस्से वाले हैं; लेकिन कैम्प में जाकर सर के स्वभाव के अनेक पहलुओं का पता चला। छोटे–छोटे बच्चों को वे अनुशासन से रहना सिखाते थे और अपने सत्रों में, खाली समय में वे उनसे प्यार भरी बातें भी करते थे। उनका कठोर और मृदु, अनुशासित और ममत्व भरा रूप दोनों ही बच्चों को प्रिय लगता था।

शिविरों में शौर्य के साथ–साथ अध्यात्म की शिक्षा भी सर बड़े स्नेहपूर्ण तरीके से देते थे। वैज्ञानिक–दृष्टि से हमारी परंपराओं का महत्त्व समझाते। बच्चे भी सुनने में इतने मग्न हो जाते कि लगता था, सर बोलते ही रहें और हम सब सुनते रहें।

शाम को जब सर हनुमान चालीसा और संकीर्तन लेते तब तो सभी बच्चे सर की उस धुन से मंत्रमुग्ध होकर संकीर्तन में डूब जाया करते। मेरी खुद की रुचि भी अध्यात्म में इसी कारण बढ़ती गयी।

गीता साधना शिविर में मिली एक नयी दिशा :

सर के कहने पर उनके साथ २००७ में पहली बार मैं ऋषिकेश के गीता साधना शिविर में गया था। वह ऐसा पहला अवसर था कि मैं ७ दिनों के लिये सर के साथ ही उनके कक्ष में रहा। शिविर के नियमानुसार प्रात:जागरण का समय ४ बजे का था; लेकिन सर ३.३० बजे ही जाग जाते। मेरा तो उठने का मन ही नहीं करता; लेकिन सर के डर से बिना आनाकानी किये किसी प्रकार बिस्तर से बाहर निकलना ही पड़ता था।

ट्रेन में यात्रा करते समय भी सर की साधना का समय होता तो वे अपनी सीट से उठकर रेल की बोगी के दरवाजे के पास जाकर खड़े–खड़े ही अपनी साधना कर लेते। ऐसे प्रसंगों को देखकर तो मैं अचंभित रह जाता।

२०१३ में मैं नृसिंहवाडी, सांगली में कार्यकर्ता शिविर के लिये गया था। नृसिंहवाडी भगवान दत्तात्रेय का स्थान है। वहाँ का माहात्म्य भी बड़ा माना जाता है। सर के साथ मुझे गुरुचरित्र पारायण करने का मौका मिला। वैसे तो पारायण ७ दिन में होता है; लेकिन हमारे पास केवल ३ दिन थे। मुझे तो ६–७ घंटे लगातार भूमि पर बैठने की आदत ही नहीं थी। स्वस्तिकासन में बैठ–बैठ कर मेरी तो हालत ही खराब हो गयी; किंतु सर ये सब बड़े आराम से कर लेते थे। ये अनुभव उस समय भले ही कष्टदायी लगे हों; किंतु सर इसका अमृतफल भी जानते थे। इस प्रकार अपने विद्यार्थियों को सहनशक्ति की चरमसीमा तक ले जाकर उन्हें भविष्य के लिए तैयार कर देते थे।

आज भी प्रतिदिन उपासना करते समय स्व सर का स्मरण करता हूँ। मै धन्य हूँ कि इस प्रकार के नित्यस्मरणीय गुरु मुझे प्राप्त हुए। स्व. सर को मेरा शत–शत नमन।

> छोटे–छोटे बच्चों को वे अनुशासन से रहना सिखाते थे और अपने सत्रों में, खाली समय में वे उनसे प्यार भरी बातें भी करते थे। प्रशिक्षण के समय दो–चार लगा देते, तो बाद में फिर पास बुलाकर लाड़ भी करते थे। उनका कठोर और मृदु, अनुशासित और ममत्व भरा रूप दोनों ही बच्चों को प्रिय लगता था।

ओकिनावा मार्शल आर्ट्स अकादमी के एक मजबूत स्तंभ: शिहान सुरेशजी जाधव!

– **ग्रेंडमास्टर एस. श्रीनिवास,** हैदराबाद

स्व. सुरेशजी जाधव मेरे सबसे पुराने विद्यार्थियों में से एक थे। किसी भी गुरु की एक ही इच्छा रहती है कि उसे एक काबिल शिष्य मिल जाए। द्रोणाचार्य जैसा गुरु होना ही पर्याप्त नहीं है; क्योंकि अर्जुन जैसे शिष्य के बिना उनका जीवन ही अधूरा रहता है। शिहान सुरेश जाधव भी ऐसे ही शिष्य थे, जिनको पाकर कोई भी गुरु धन्यता का अनुभव करे।

सुरेशजी एक अद्भुत व्यक्ति थे। सीखने की लगन उनके अंदर भरी हुई थी। १९९४ में मॉरिशस में हुए International Kick Boxing Championship में सबसे कम उम्र के अंतर्राष्ट्रीय किक–बॉक्सर बनने का गौरव आपने स्थापित किया. ओकिनावान मार्शल आर्ट्स अकादमी के ४० वर्षों के इतिहास में अब तक ८ लोगों को '**शिहान**' की उपाधि मिली है और यह उपाधि प्राप्त करने वाले सबसे युवा व्यक्ति भी सुरेशजी ही थे। कराटे की ब्लैक बेल्ट 7th डान की पदवी पाने वाले सबसे युवा व्यक्ति भी आप ही थे। आपका गहरा ज्ञान, विषय की समझ, मार्शल आर्ट का अभ्यास और योग–अध्यात्म के प्रति लगाव, ये ऐसे गुण थे, जिनसे आपने ये कीर्तिमान स्थापित किये।

सुरेशजी ने ऐसे शिष्यों का निर्माण किया; जो शहर स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक की किसी भी स्पर्धा में पुरस्कारों की झड़ी लगा देते थे। आपने सैकड़ों ब्लैक बेल्ट शिष्यों को तैयार किया। १५ राष्ट्रीय चैंपियनशिप स्पर्धाओंका आपने आयोजन किया और आपकी गिनती सफलतम आयोजकों में होने लगी। कराटे के साथ–साथ योग–प्राणायाम के क्षेत्र में सुरेशजी की सफल यात्रा के भी हम साक्षी रहे और एक ग्रैंडमास्टर के रूप में मैं हमेशा ही उन पर गर्व करता था।

एक साल पहले अचानक उनके देहांत से विश्व कराटे ने अपने सबसे अनमोल रत्न को खो दिया। केवल ओकिनावा ही नहीं; बल्कि कराटे की हर शिक्षण पद्धति से जुड़े लोगों के लिए ये एक बहुत बड़ा आघात था। आज वे भले ही हमारे बीच न हों; किंतु उनके ज्ञान की विरासत सदैव हमारे साथ रहेगी। भारतीय कराटे के शिखर पर उनका परचम हमेशा लहराता रहेगा।

गुणवंदन..

सातारा शहर से सर का अटूट संबंध था और वैसा ही संबंध गीता परिवार की सतारा शाखा से भी रहा। सिखाते समय सर इतने मंत्रमुग्ध हो जाया करते थे कि न तो समय का भान रहता और न भूख–प्यास का। विद्यार्थी भी ऐसे बैठे रहते; जैसे उनकी कक्षा कभी खत्म ही न हो; प्रज्ञासंवर्द्धन, सर्व कल्याण योग, सृजन शिविर हो या महाबलेश्वर के ग्रीष्मकालीन शिविर ! विविध रूपों में सर का दर्शन मुझे हुआ।

राष्ट्रभक्त.. धर्मनिष्ठ.. योगी.. तपस्वी.. गुरुभक्त.. जीवन अनुशासनबद्ध.. ज्ञान के भंडार.. नियमों के कठोर.. किंतु वात्सल्य से भरे.. पराक्रमी.. परिश्रमी..

ऐसे जाधव सर को मेरा वंदन! वे हमेशा ही रामधुन सभी के साथ गाते थे। उनका वह स्वर आज भी मेरे कानों में स्पष्ट सुनाई दे रहा है।

श्रीराम जय राम जय जय राम

– **गीता मामनिया,** सातारा

-: दिव्य प्रवास :-

भूदेव को अच्छा मुहूर्त पूछा। सर के समीप गयी, माथे पर हाथ फेरकर कहा कि '**अंतिम श्वास को और थोड़ी देर रोक दीजिए, अच्छे मुहूर्त पर अंतिम प्रवास आरंभ करना।**' सर ने अचानक नेत्र खोले, अत्यंत दयार्द्रऔर तेजस्वी नजर... अंतिम निरोप लेते समय की झलक प्रस्फुटित हुई। मेरे भीतर त्रयोदशाक्षरी मंत्र चल रहा था। अकस्मात् मेरे नेत्र भृकुटिमध्य में खिंचकर ऊर्ध्व हुए। मुझे लगा कि जैसे आसपास का वातावरण एक दिव्य प्रभामंडल में बदल गया हो, दिव्य स्वर गूँजने लगे..जैसे कि भगवान विष्णु का गरुड़ारूढ दर्शन हुआ हो और उन्होंने हाथ बढ़ाकर सर को साथ में ले लिया। सर ने सस्मित मुद्रा से धुंधली वाणी में अंतिम शब्द उच्चारे..'आता हूँ- श्रीराम...!'

'गृहस्थ संन्यासी' 'महायोद्धा' श्री सुरेश जी जाधव!

– श्रीमती संगीता सुरेश जाधव

आदरणीय स्वर्गीय सुरेशजी जाधव सर का देहान्त हुए एक वर्ष पूर्ण हो रहा है। आज उनके पुण्यस्मरण में शब्दों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सर के साथ बिताये पैंतीस वर्षों का जीवन नेत्रों के सामने से प्रवाहित हो रहा है। बार-बार नेत्र द्रवित हो रहे हैं; किंतु सर के द्वारा मन में बोया गया मंत्र, ''एक अच्छे युद्धकला एवं योगविद्या साधक को प्राय: अपनी भावनाएँ नियंत्रित रखनी चाहिये!'' यह कान में गूँज उठता है और मन को काबू करने का प्रयास भीतर से जाग्रत होता है।

स्मरण आ रही है, पहली भेंट..! सन १९८४ स्थल– महाराष्ट्र का शहर सातारा। छात्रसेना (NCC) द्वारा ''ड्युक ऑफ एडिंबर'' की योजना के अंतर्गत 'यूथ एक्स्चेंज प्रोग्राम' में चयनित होने के लिये प्रतिभागी छात्रसैनिक को किसी न

योद्धा – योगी जाधव परिवार
बांए से – बेटी भुवनेश्वरी, पत्नी– श्रीमती संगीता, जाधव सर एवं (दाहिने) बेटा हेरंब।

किसी युद्धक्रीड़ा में सहभागी होना अनिवार्य था। तब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ रही थी और जिम्नास्टिक एवं ज्युडो सीख रही थी; किंतु नियम के अनुसार 'कराटे' युद्धकला तथा क्रीडा का प्रकार चुनना आवश्यक था। उस समय स्थानीय 'वार्ता' पत्रिका में एक विज्ञापन पढ़ा – ''लड़कियों के लिये कराटे वर्ग का आरंभ'' और मैं पहुँच गयी 'शिवाजी उदय मंडल' में..!

युवावस्था में ही साधनाकाल में दृष्टान्त प्राप्त कर, गोवा प्रांत से समर्थ रामदासजी के सज्जनगढ़ (सातारा) पहुँचे रामभक्त श्री सुरेश जाधव सर को मैंने प्रथम बार देखा– कराटे के वेश में युद्धकला का अभ्यास करते हुए.. लयबद्ध गति और चाल, व्यायाम के कारण माथे पर चमकते श्रमबिंदु और चेहरे पर सहज आत्मविश्वास का तेज ! प्रशिक्षण वर्ग की जानकारी देते समय एक बार भी मुझ पर उनकी दृष्टि रुकी नहीं। 'महिला–युवतियों की तरफ आँखें रोक कर न देखने की यह आदर भावना और तीन फीट दूरी का अंतर रखकर ही वार्तालाप करने के नियम का पालन सर ने अंतिम समय तक किया !'

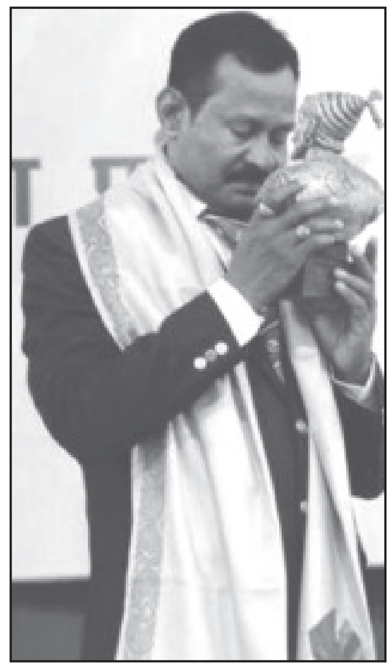

प्राचीन भारतीय युद्धकला के प्रचंड आकर्षण के कारण वर्ष १९८५/८६ में कहीं से जानकारी लेकर प्राचीन; किंतु लुप्तप्राय युद्धकला '**कलरीपयत**' सीखने के लिये सर केरल प्रांत के अलेप्पी जिले के खड़ूतुरूति ग्राम में श्री वासू गुरुकाल के कलरी (प्रशिक्षण केंद्र) जा पहुँचे। सर की अनुपस्थिति में छ: महीनों तक सातारा, पंचगणी के कराटे वर्ग अन्य दो सहायकों के साथ मैं संचालित करती रही।

प.पू. गुरुदेव के प्रथम दर्शन:–

वर्ष १९८६/८७ में सातारा के माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा निवासी बालिका संस्कार शिविर में 'स्व-संरक्षण' के प्रात्यक्षिक प्रस्तुत करने हेतु हमें आमंत्रित किया गया। 'वहीं पर सौभाग्य से पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी (तब के आचार्य श्री किशोरजी व्यास महाराज जी) का प्रथम दर्शन हुआ' और आपके निर्देश पर 'गीता परिवार' के बाल संस्कार कार्य से हम जुड़ गये। उसके पश्चात कई वर्षों तक गीता परिवार के भारत भर में आयोजित निवासी बाल संस्कार एवं कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविरों में मैं प्रधान शिक्षिका एवं सर योग, 'स्वसंरक्षण तथा उपासना सत्र प्रमुख' के नाते संस्कार कार्य के विस्तार हेतु सेवारत रहे! स्मरण है कि तब पूज्य गुरुजी ने प्रशिक्षण हेतु मानधन के बारें में पूछा और सर ने तत्काल उत्तर दिया.. ''**इसी जन्म में मोक्ष प्राप्त हो गुरुदेव – इतना आपका आशीर्वाद ही बस है...!**''

इसी दौरान मेरे पिता वरिष्ठ पुलिस अधिकारी स्व. के.टी.कुलकर्णी द्वारा सातारा के 'पुलिस रिक्रिएशन हॉल' और 'सैनिक स्कूल' में हमारे प्रशिक्षण केंद्र शुरू हुए और मेरे पिताजी के सहयोग से ही सातारा का दायित्त्व मुझ पर छोड़कर सर सोलापुर चले गए, व्यवसाय वृद्धि हेतु! तभी से अक्कलकोट के स्वामी समर्थ पर उनकी श्रद्धा इतनी बढ़ती गयी कि 'मृत्युपर्यंत प्रत्येक गुरुवार की सुबह स्वयं उपस्थित रहकर अक्कलकोट में स्वामी समर्थ का अभिषेक कभी भी चूकने नहीं दिया..!' सोलापुर में पहले कुछ वर्ष पार्क स्टेडियम और फिर ज्ञानप्रबोधिनी, तत्पश्चात शिवस्मारक और दमाणी विद्या मंदिर तथा आय.एम.एस. में हमारे नियमित वर्ग शुरू हुए! उसके पश्चात संगमनेर, बीड, पुणे, मुंबई, कोल्हापुर, सिंधुदुर्ग, गोवा, कर्नाटक में शाखायें स्थापित हुईं। 'सभी प्रशिक्षण केंद्रों में विद्यार्थियों द्वारा योगाभ्यास तथा श्रीमद्भगवद्गीता के बारहवें, पंद्रहवें

पू.गुरुदेव से सम्मानित होते हुए

व सोलहवें अध्याय का पठन सर आग्रहपूर्वक करवाते थे, जो आज भी उसी प्रकार चल रहा है..!'

कलरीपयटु और कराटे युद्धकला के प्रचार-प्रसार, प्रशिक्षण तथा १५ राष्ट्रीय और २३ प्रांतस्तरीय 'ओकीनावान कराटे' प्रतियोगिता तथा १८ प्रांतस्तरीय सैनिक प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन का हमारा प्रयास एक साथ मिलकर अग्रसर एवं गतिमान हुआ और इसके साथ ही वर्ष १९९१ में हमारे दाम्पत्य जीवन में प्रवेश भी..! संस्कृत विषय के साथ मेरी पदवी शिक्षा, युवती एवं महिला संगठन का– 'महिला महोत्सव–श्रीमती महाराष्ट्र प्रतियोगिता' का कार्य, बाल संस्कार एवं कार्यकर्त्ता

प्रशिक्षण, पू. गुरुजी के वाग्यज्ञों का तथा अन्य लेखन और जीवनयापन हेतु व्यवसाय इत्यादि 'मेरे व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक क्रियाकलापों में उन्होंने कभी भी विरोध अथवा दखलअंदाजी नहीं की। केवल मुझे प्राय: सावधान रहने का आग्रह रखा। स्व. सर का सजग प्रोत्साहन ही आजीवन मुझे उचित दिशा पर मार्गस्थ करता रहा..!'

बजरंग दल व दुर्गावाहिनी में सेवा :–

पूज्य गुरुजी के संकेतमात्र से वर्ष १९९१/९२ से विश्व हिन्दु परिषद में सर बजरंग दल और मैं दुर्गावाहिनी के माध्यम से राष्ट्र एवं धर्मकार्य में जुट गये। इस दौरान गौ–रक्षा आंदोलन में सर ने स्वयं को झोंक दिया था। 'किशोरावस्था से ही उन्हें गोवा में महामाया के मंदिर में ध्यान की स्थिति में बछड़े के साथ श्वेत गौमाता के दर्शन होते थे, इसलिये बजरंग दल द्वारा जब गौ–रक्षण का आंदोलन आरम्भ हुआ, तो उन्होंने इस कार्य को सर्वाधिक प्रधानता दी। कराटे के युवा विद्यार्थियों का संगठन कर उनके मन में गौ सेवा एवं गौ रक्षा का बीज बोया और परिश्रम के साथ क्रियाशील रहे। आज भी वे सभी युवा गोसेवा और रक्षा के कार्य में कार्यरत हैं! अयोध्या रामजन्मभूमि आंदोलन, कारसेवा तथा अमरनाथ सुरक्षा यात्रा में सर और उनके बजरंगियों का बहुत बड़ा योगदान रहा!'

विश्व कराटे प्रतियोगिता :–

वर्ष १९९९ के अगस्त मास में जर्मनी में आयोजित चौथी विश्व कराटे प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करने का अवसर सर के सामने आया; किंतु शिवसाम्राज्य दिन के उपलक्ष्य में विहिप आयोजित जुलूस में बिना अनुमति के शस्त्र प्रात्यक्षिक के प्रदर्शन करने का आरोप सर पर लगा था। कोर्ट में यह केस चल रहा था, इस कारण जर्मनी प्रवास के लिये सर को पासपोर्ट–विजा नहीं मिला। इस स्पर्धा के लिये सर ने कई महीनों से बड़ा परिश्रम किया था; किंतु सर निराश नहीं हुए। दो महीने का समय था और केवल इन दो महीनों में उन्होंने मुझे प्रशिक्षण दिया। दिन–रात मुझसे अभ्यास करवाया। अपने वरिष्ठ विद्यार्थियों अविनाश और कौस्तुभ के साथ मुझे उन्होंने जर्मनी भेजा। जाते समय एक ही बात कही – ''भारतमाता की छाप छोड़कर ही लौटना''।

हमारी पहली संतान भुवनेश्वरी, (जिसे हमने गुरुदेव को अर्पित किया था) उस समय चार साल की हो रही थी और हेरंब (आगे जाकर जिसका मुंजबन्धन और गुरुदीक्षा कार्यक्रम स्वयं गुरुदेव द्वारा संपन्न हुआ था) सवा वर्ष का था। पंद्रह दिनों तक दोनों छोटे बच्चों का ध्यान सर ने स्वयं रखा। 'सर के निश्चय और अभ्यासपूर्वक परिश्रम तथा गुरुदेव के आशीर्वाद से हम 'जीतकर' ही लौटे,..!'

सर की दिनचर्या अत्यंत अनुशासित रहती थी। बच्चों से और मुझसे भी इसी प्रकार के अनुशासित दिनचर्या की अपेक्षा वे रखते थे। 'पैंतीस वर्षों में मैंने समीप से अनुभव किया कि सर का भोर में सूर्योदय पूर्व जगना, शुद्ध सात्त्विक आहार, हर शनिवार का हनुमान दर्शन एवं चालीसा का पाठ, व्यायाम, योग एवं युद्ध तंत्रों का अभ्यास ये सब अत्यंत नियमित एवं नियंत्रित रहा!' प्रतिदिन सर प्रात: चार से साढ़ेचार के बीच उठते ही थे। प्रवास में भी, जहाँ रहते, वहाँ पर भी सूर्य–उपासना के साथ विशेषत: प्राणायामादि अंतरंग योगसाधना पर उनका जोर रहता था। उनका आग्रह इतना ही रहता था कि उन दो घंटों में उनके कक्ष में अथवा आसपास कोई प्रवेश न करे।

अंतरंग योग में विशेषज्ञता :–

अंतरंग योग में, विशेषत: 'प्रत्याहार– धारणा– सगुण/निर्गुण ध्यान' एवं 'केवल कुंभक स्थिति' इन विषयों पर स्व.सर का सूक्ष्म तथा संपूर्ण अध्ययन था। 'इन विषयों के अभ्यास में सर प्राय: निरंतर तल्लीन रहते। जब तक अंतिम स्वरूप समाधानकारक प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक 'महर्षि विश्वामित्र' जैसे अथक प्रयासरत

नियुद्ध एवं योगाचार्य सुरेश जी जाधव

पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी के अंतरंग शिष्य

संक्षिप्त परिचय

जन्म	: १ जून १९६०
शिक्षा	: बी.एस्सी. (केमिस्ट्री)
विशेष शिक्षा एवं उपाधि	: ब्लॅक बेल्ट सेवन्थ दान – 'शिहान' (ओकिनावा कराटे एवं कराटे असो. ऑफ इंडिया-KAI) ब्लॅक बेल्ट थर्ड दान (कलरीपायटू – प्राचीन भारतीय युद्ध कला)
विशेष अभ्यास	: शिव स्वरोदय शास्त्र
विशेष योगाभ्यास	: बाल एवं युवा के लिए 'प्रज्ञा संवर्धन योग'
रचनाएं प्रकाशित	: साधकों के लिए 'प्रत्याहार – सगुण ध्यान में प्रवेश' 'स्वास्थ्य हेतु – प्राणायाम – सर्व कल्याण योग'
विशेष उपलब्धि	: संस्थापक प्रधानाचार्य – सर्व कल्याण योग (SKY) संस्थापक अध्यक्ष – महाराष्ट्र कराटे एंड किक बॉक्सिंग फेडरेशन – MKKF राष्ट्रीय उपाध्यक्ष – कलरीपयटू फेडरेशन ऑफ इंडिया राष्ट्रीय उपाध्यक्ष – गीता परिवार तांत्रिक प्रमुख – महाराज ओकिनावा मार्शल आर्ट्स
विषय संयोजन	: २० लग्जरी प्रशिक्षण शिविर, १५ राष्ट्रीय, २३ प्रांतीय कराटे प्रतियोगिता का संयोजन/आयोजन
विशेष प्रशिक्षण प्रदान	: 'स्काय' अंतर्गत ३००० अध्यापक कार्यकर्त्ताओं को 'प्रज्ञा संवर्धन योग' का प्रशिक्षण प्रदान। ज्ञानेश्वर गुरुकुल अंतर्गत 'गीता साधना शिविर-ऋषिकेश' में उच्च श्रेणी साधकों को 'प्रत्याहार-धारणा-ध्यान' का प्रशिक्षण प्रदान।
४० वर्ष योग एवं नि युद्ध कला क्षेत्र में कार्यरत – अभ्यासरत रहें!	
देहावसान	: ८ अक्टूबर २०१९

रहते।' जो ज्ञान उन्हें प्राप्त होता, उसे अन्यों तक पहुँचाने से पूर्व हमारे बच्चों भुवनेश्वरी (मनू), हेरंब (मिहिर) और मुझ पर सारे प्रयोग पहले आजमाते थे। इस प्रक्रिया में उन्हें लोकव्यवहार तथा समय का जरा भी भान नहीं रहता था। कई बार बच्चे इन प्रयोगों के लिए अपने विद्यालय या महाविद्यालय से छुट्टी लेते और बड़ी प्रसन्नता से सर के निर्देशानुसार अभ्यास करते। मेरा भी नित्य गृहकर्तव्य हो अथवा व्यवसाय-संस्कार कार्य, पहली प्राथमिकता सर के प्रयोग ही होते थे; क्योंकि उनके विचार किसी बिजली की तरह कौंधा करते थे और तुरंत यदि उन पर कार्य नहीं किया, तो ओझल भी हो सकते थे। प्राणायाम-ध्यान-योगसाधना के प्रयोगों के समय वे उसे वर्णित करते जाते थे, जिसे त्वरित लिखने की जिम्मेदारी मुझ पर होती थी। कई बार सर अपने विचारों को; जो भी कागज हाथ में आया, उसी पर बारीक अक्षरों में लिख लिया करते थे। कभी किसी विवाहपत्रिका पर तो कभी समाचारपत्र के किसी कोने में – कहीं पर भी– जो भी समीप उपलब्ध हो– उस पर छोटे अक्षरों में लिखा उनका लेखन संकलित कर उसे क्रमबद्ध करके ठीक से लिखने के बाद संभालकर रखने का दायित्त्व मुझपर रहता था। हाँ, यदि इस लेखनकार्य में कभी देर हो गयी या कोई कागज कभी नहीं मिला, तो सर रुद्रावतार धारण कर लेते थे। उनके ये विचार-प्रयोग-साधना ही उनके लिए उनकी खरी संपत्ति थे। 'दाम्पत्य जीवन में स्व. सर का 'जमदग्नि अवतार' कई बार मेरे अथवा बच्चों के उद्रेक तथा नाराजी का कारण होता था; किंतु हम यह भी जानते गये कि सर का ज्ञान, उनके परिश्रम, सद्गुरु की आज्ञा- राष्ट्र- धर्म- संस्कृति आदि के प्रति उनके हृदय की श्रद्धा भावना, समाज तथा भावी पीढ़ी के लिये सर्वहितकारक है और फिर धीरे-धीरे हम भी उनके मनोभाव एवं कार्यप्रणाली के साथ स्वयं को साधते चले गये !' बच्चों की लौकिक शिक्षा के प्रति अधिक ध्यान न देनेवाले सर ने बच्चों को प्रधानता से गुरुमंत्र से दीक्षित करवाया और ग्रहण काल तथा विविध मुहूर्तों पर नृसिंहवाडी, आलंदी, ब्रह्मगिरि, हृषिकेश, हरिद्वार, चार धाम आदि पवित्र स्थलों पर हमसे कई अनुष्ठान करवाये!

गीता परिवार हेतु प्रकाशन कार्यः–

ऋषिकेश में ज्ञानेश्वर गुरुकुल द्वारा आयोजित गीता साधना शिविर में सम्मिलित साधकों के लिये

प्राणायाम तथा अंतरंग साधना के सत्र आदरणीय सर द्वारा संचलित होते थे। सर के मार्गदर्शन में निरन्तर अभ्यास के बाद उन क्रमबद्ध योगतंत्र के विलक्षण अनुभव साधकों को आने लगे। वर्ष २००५ में उन साधकों के द्वारा की गयी माँग पर हमने पचपन मिनट के यौगिक व्यायाम एवं क्रमबद्ध योगतंत्र की **'सर्व कल्याण योग'**- स्काय की ध्वनिचित्रफीत' मुंबई के केशवसृष्टि परिसर में श्री महेंद्रभाई काबरा जी के सहयोग से निर्माण की। २००७ के मई मास में उच्च स्तरीय साधकों के लिये **'प्रत्याहार - सगुण ध्यान में प्रवेश'** तथा 'बालक व युवावर्ग के लिये **'प्रज्ञासंवर्धन एवं योगमय व्यवहार'** इन दो अभ्यासक्रमों की रचना सर ने की; जिसे मैंने मराठी में **'मस्तिष्क संवर्धन'** शीर्षक से...शब्दांकित किया था। पूज्य गुरुजी ने इसका सटीक नामकरण किया- **'प्रज्ञासंवर्धन योग'**..! अगस्त मास में इन दो पुस्तिकाओं का प्रकाशन पुणे में गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्यकर्ता वर्ग में होना था। **'प्रत्याहार- सगुण ध्यान में प्रवेश'** यह अभ्यासक्रम पुस्तिका सोलापूर में मैंने हिन्दी में लिखी और पुणे में श्री सोमण सर द्वारा संपादित की गयी। **'प्रज्ञासंवर्धन तथा योगमय व्यवहार'** का मुद्रण संगमनेर में डॉ. संजयजी मालपाणी के प्रयासों से हुआ। इस तरह केवल दो महिने में ही ये दो पुस्तकें समय पर प्रकाशित हो गईं। भारत भर में अब तक ३००० अध्यापक, कार्यकर्ताओं को और उनके द्वारा डेढ लाख विद्यार्थियों को प्रज्ञासंवर्धन योग का प्रशिक्षण दिया गया है!

आजीवन अखण्ड अभ्यास :-

'युद्धकला के प्रति स्व. सर की रुचि तथा लगन इतनी थी कि इस क्षेत्र में चालीस वर्षों के उनके अध्ययन तथा अभ्यास में कभी भी अधिक खंड नहीं हुआ।' जीवन में दो बार छोटी कालावधि के लिये उन्हें अस्पताल में दाखिल होना पड़ा; परंतु उस काल में भी क्षमतानुसार उनका अभ्यास निरंतर चलता रहा।

किसी भी प्रशिक्षण सत्र से पहले सर अपनी पूर्वतैय्यारी पूर्णरूप से अवश्य करते थे। 'योगतंत्र हो अथवा युद्धतंत्र, जो अभ्यासक्रम जहाँ सिखाना है- वहाँ पर समय से पहले उसका अभ्यास अवश्य करते।' यह सिलसिला अंतिम समय तक चला!

'प्रशिक्षण सत्र में विद्यार्थियों के 'परफेक्शन' पर उनका विशेष ध्यान रहता। सटीक क्रियान्वयन के लिये कई बार वे 'रुद्र अवतार' धारण करते। जो विद्यार्थी एवं अभिभावक स्व. सर की सच्ची हृदय भावना जान पाये, वे आज अपने-अपने क्षेत्र में शीर्षस्थान पर हैं..!'

आदर्श कार्यकर्ता :-

'वर्तमान काल के ऊपरी लोकव्यवहार से सर उदासीन थे।' इसलिये व्यवसाय में उनके सहायक कभी-कभी उनसे नाराज रहते। लेकिन 'सर समझाते रहते थे कि 'जो मिल रहा है, उसमें संतुष्ट रहो। दूसरों का नुकसान करके स्वयं का फायदा करने का स्वभाव ठीक नहीं है। परस्पर स्पर्धा और निरर्थक महत्त्वाकांक्षा का मोह व्यक्ति को ठीक से सोने नहीं देता और जीने भी नहीं देता। अत: सावधान..!' युद्धकला के क्षेत्र में जिस अंतरराष्ट्रीय संगठन से हम संलग्न है, उसके संस्थाप्रमुख ग्रँडमास्टर एस. श्रीनिवासनजी को सर ने एक बार 'मास्टर' मान लिया, तो आजीवन उनसे विनम्रतापूर्वक संबंध बनाये रखे। कई प्रसंगों में अव्यावसायिक व्यवहार में भी स्व. सर कभी भी विचलित होकर उनसे दूर नहीं हुए तथा प्रसंगवश नाराजगी को तत्काल बाजू में रखकर संगठन से अपनी निष्ठा कभी भी कम नहीं होने दी..!

'जिस भी तत्त्व, आदेश, संकेत अथवा कार्यभार को एक बार स्वीकार कर लिया, तो दृढ़निश्चय और वचनबद्धता से उसे निभाना, यह सर की विशेषता थी। खास कर पूज्य सद्गुरु स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज द्वारा जो भी निर्देश दिये जाते, उसे निष्ठा पूर्वक यथोचित रीति से पूर्ण करना। यह उनके लिये शीघ्र शिरोधार्य रहता था। उस क्रियान्वयन में वे एक बार भी न तो स्वयं प्रश्न उठाते और न ही कोई प्रश्न उठने देते..!'

तेरहवें दिन पूज्य गुरुजी स्वयं पधारे। आपके आगमन से और श्रद्धांजलि सभा में आप के इस कथन से कि 'आदि शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद, छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे लोकहितकारी व्यक्ति अल्प आयुकाल में ही अपना जीवनध्येय पूर्ण करके अधिक उच्च हितकारक ध्येय हेतु नूतन देहसाधन धारण करते हैं, इस जन्म के सारे कर्मभोग यहीं पर समाप्त करके!'... बच्चे और मैं अधिक आश्वस्त हुए, कोई चिंता-भय-दुःख-दर्द रहा ही नहीं।

पारंपरिक एवं आधुनिक दोनों कलाओं के पक्षधरः-

स्वयं वरिष्ठ तथा अनुभवी मार्शल आर्टिस्ट थे, फिर भी आधुनिक अंतरराष्ट्रीय स्पोर्टस् कराटे तंत्र और पारंपारिक युद्धकला कलरीपयत सीखने एवं उसके प्रदर्शन हेतु बेटी भुवनेश्वरी (मनू) और बेटा हेरंब (मिहिर) को अन्य तज्ज्ञों द्वारा प्रशिक्षित कराके केरल, कर्नाटक, म.प्र., दिल्ली, मलेशिया, थायलैंड, दक्षिण व उत्तरी अमेरिका, द.अफ्रिका, स्पेन, चिले इत्यादि देशों में भेजने में उन्होंने कोई हिचकिचाहट नहीं की। इसी कारण दोनों बच्चे योगविद्या व युद्धकला दोनों क्षेत्र में स्वयं को अच्छे साधक, अभ्यासक और प्रशिक्षक तथा विजेता सिद्ध कर पा रहे हैं।

'दिखावा और छलकपट से आजीवन दूर रहे।' और इस तरह का व्यवहार करने वाले व्यक्ति और प्रसंग के बीच उनका क्रोध तत्काल ही उत्पन्न होता था। विशेषकर योग-प्राणायाम के अनावश्यक प्रदर्शन और व्यापार करने में सर कभी भी अधिक अनुकूल नहीं रहे। 'दिखावे' का 'समर्थन' करना भी उन्हें मंजूर नहीं होता था। ''मूल प्रशिक्षण और संस्कार प्रक्रिया पर ध्यान दो..ऊपरी भपका मत करो..!''..प्राय: यह उनका कथन रहता। मार्केटिंग और एडव्हरटायजिंग के वर्तमान युग में सर की सादगी उन्हें सांसारिक रूप में उस शिखरस्थान पर नहीं ले गयी जिसके वे अधिकारी थे। हाँ, यदि कुछ काल और इस जीवन में ही वे रहते तो अवश्य उनकी साधना और गुरुदेव का आशीर्वाद उन्हें शीर्ष तक ले जाता; किंतु समाज के मनोशिखर पर स्व. सर सदैव विराजित रहेंगे, इसमें कोई आशंका नहीं!

वे अंतिम चार दिन! :-

'सर का अंतिम समय..!' एक-एक सेकंड और मिनट स्मरण में है, मानो अभी आसपास यह सब घटित हो रहा हो..! किसी अज्ञात विषाणु का तीव्र आक्रमण सर के स्वादुपिंड पर हुआ था। दीमक की तरह उस विषाणु ने भीतर से एक-एक अवयव का कार्य नष्ट करना शुरू किया था। नियमित कठोर अनुशासित दैनंदिनी और नित्य योगाभ्यास के कारण सात-आठ दिन भीतर से शरीर का कुरेदा जाना सर के ध्यान में नहीं आया। वैद्यकीय सूत्रों के अनुसार निश्चित ही वेदना अवश्य रही होगी, परंतु वेदना की परिसीमा तक उन्होंने कुछ दर्शाया नहीं। चुपचाप सहते रहे। आहार केवल दूध अथवा छाछ- रोटी तक सीमित हुआ था!

'पाँच अक्टूबर की सुबह'.. नियमित योगाभ्यास पूर्ण करके मैं सर के निर्देशानुसार कुछ लेखन कार्य करने बैठी। सर के साधना-योग-संशोधन कार्य निरंतर चलते ही रहते थे। पंद्रह वर्ष पूर्व रचित प्रज्ञासंवर्धन के अभ्यास में भी अपने नए प्रयोगों और अनुभव के आधार पर सर परिवर्तन करना चाहते थे। कुछ त्रुटियाँ भी ध्यान में आईं थीं; जिन्हें सुधारकर उनके बताए अनुसार मैं लेखन कार्य कर रही थी। कई दिनों से लेखन करते-करते अब यह कार्य अंतिम चरण में था। ''लेखन पूर्ण करो, तब तक वर्कआऊट करके मैं आता हूँ..'' ऐसा कहकर बेटी भुवनेश्वरी के साथ 'जिम' चले गये। लौटकर जब आये, तब थोड़ा-सा लिखना बाकी था। ''पेट में दर्द हो रहा है, थोड़ा लेटता हूँ.. लेखन पूर्ण होने के बाद मुझे सुना देना''... इतना कहकर सर आराम करने लगे। दस-पंद्रह मिनट में मेरा लिखना पूर्ण हुआ और मैं उन्हें पढ़कर सुनाने लगी। श्रवण करते समय चेहरा इतना शान्त था कि मुझे जरा-सी भी भनक नही पड़ने दी कि वे कितनी मरणप्राय वेदना सहन कर रहे थे। लेखन में कुछ सुधार बताकर उसे दुरूस्त करने को उन्होंने

कहा; किंतु पाँच-दस मिनट में पेट की वेदना चरमसीमा तक पहुँची होगी, तभी उठकर मेरे पास आकर करुण स्वर में बोले, ''तुझे लिखने में मैं जरा व्यत्यय कर सकता हूँ क्या...?'' लिखते-लिखते मैं एकदम से रुक गयी और नजर उठाकर सर की आँखों में देखा। क्या था वहाँ पर..? वेदना, हतबलता के साथ सामंजस्य, प्रेम, करुणा सब कुछ....! इतनी मिश्रित भावनाएँ कभी भी सर में नहीं देखी थी। मैं समझ गयी कि निश्चय ही, कुछ-न-कुछ गड़बड़ है। घर पर सर की माताजी भी थोड़ी अस्वस्थ थीं, तो उनके पास मैं रुकी और चिकित्सा हेतु तुरंत बेटी के साथ सर को डॉक्टर के पास भेज दिया। इतनी वेदना में भी बेटी को मना करते हुए स्वयं गाड़ी चलाकर सर अश्विनी अस्पताल पहुँचे। त्वरित उपचार शुरू हुए। वहाँ उनकी अस्वस्थता बढ़ती गयी। एक ही दिन में प्रकृति चिंताजनक हो गयी। अनजान विषाणु ने स्वादुपिंड पूरी तरह से कमजोर कर दिया था। उसके कारण किडनी पूर्णत: निष्क्रिय हो गयी और हृदय पर तीव्र दबाव आकर कमजोरी बढ़ने लगी। एक-एक अवयव का कार्य मंद होने लगा..! पुणे से विशेषज्ञ डॉक्टर आये, सभी संबंधित स्पेशल डॉक्टर्स की फौज तैनात हुई। बाहर से सारी सपोर्ट सिस्टम लगायी गयी..! ऐसे में भी सर उठकर बैठने की जिद करने लगे, परंतु आय.सी.यू. में अश्विनी रुग्णालय के चेअरमेन बिपिनभाई पटेल द्वारा दी गयी व्यक्तिगत सूचनानुसार विशेषज्ञों के निर्देश से उच्च श्रेणी के वैद्यकीय उपचार शुरू रहे।

गीता परिवार के सोलापुर शाखाध्यक्ष ओमभैय्या दरक और मेरे छोटे भाई भारतीय नौदल के कॅप्टन संजय कुलकर्णी पूर्ण समय साथ दे रहे थे। विकास बँक अध्यक्ष राजभैय्या मणियार, रा.स्व.सं. के दामोदरजी दरगड, बंग काकाजी, दमाणी विद्या मंदिर के संचालक नंदकिशोर भराडिया, आय.एम.एस. संचालक अमोल एवं सायली जोशी, महाराष्ट्र के कराटे प्रशिक्षक प्रभु, शिवशरण, वृषाली, आकाश, सुवर्णा, योगेश, दत्ताभाऊ, प्रताप, महेंद्र, संजय, प्रियंका, गोपाल झंवर, गोपाल सोमाणी, विश्वनाथ चिडगुंपी...सारे अदल-बदल कर सहयोग में जुड़ते गये।

'छः अक्टूबर..' पूज्य गुरुजी को जैसे ही पता चला, आपने तुरंत वेदपाठशाला, योगसाधक, गीतासाधक, संस्कार कार्यकर्ताओं द्वारा आध्यात्मिक एवं धार्मिक अनुष्ठान आरंभ करवाये गये। मार्शल आर्ट के क्षेत्र के मास्टर, शिहान, कलरीपयटू के गुरूकाल, सभी सहायक प्रशिक्षक, विद्यार्थी-अभिभावक , परिचित, मेरी सखियाँ इत्यादि सभी जनों ने अपनी ओर से प्रार्थना शुरू की। पूरे दिन क्रीडा, राजकीय, सामाजिक, व्यावसायिक, आध्यात्मिक क्षेत्र से लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। अस्पताल व्यवस्थापन ने अंतत: No Visit का बोर्ड लगाकर और रक्षक-दल बढ़ाकर बंधन लगा दिया।

'सात अक्टूबर..' 'मृत्युपूर्व एक दिन..'

गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय मालपाणी संगमनेर से स्वयं पधारे। उन्होंने और मुंबई के हेमा फाउंडेशन के विश्वस्त संचालक महेंद्रभाई जी काबरा ने अन्य शहर के वैद्यकीय विशेषज्ञों से भी सलाह ली, 'हम हैं साथ में, हिम्मत मत हारना'.. यह आधार देकर मेरी चिंता कम करने का प्रयास किया। अपनी पूरी शक्ति इक्कठ्ठा करके सर ने मुझसे कुछ बात की। और फिर उसके बाद सर एकदम निस्तब्ध हो गये। उस रात गुरुजी ने फोन पर उन्हें भीतर से ॐ कार जप शुरू रखने का संदेश दिया था, वह बताने उनके पास गयी, तो उन्होंने मुझे ही जाप करने को हाथों से सूचित किया। देर रात भुवनेश्वरी, हेरंब और मैं हम तीनों ने जप आरंभ किया। १०८ संख्या पूर्ण होने तक शांति से सुनते रहे, ऑक्सीजन मास्क हटाकर अंतिम पाँच संख्या का स्वयं उच्चारण किया और श्रीराम कहते हुए फिर से स्तब्ध हो गये! मध्यरात में मैंने न जाने क्यूँ, बेटे हेरंब को प्रात:काल सर के पास में विष्णुसहस्रनाम का जप एवं श्रीगीताजी के अध्याय पठन करने को और आलंदी से पूज्यवर ने भेजा हुआ इंद्रायणी का जल देकर अनुष्ठान

का भस्म सर के मस्तक पर लगाने के लिये कहा..!

आता हूँ – श्रीराम :–

'आठ अक्टूबर..' 'दशहरे का दिन..!' सुबह नौ दस बजे मुख्य डॉक्टर ने चिंतित और गंभीर स्वर में उपचार से हाथ ऊपर उठा दिए...! उस समय छोटे भाई के साथ मैं अकेली थी। एक क्षण के लिए सन्न रह गयी। फिर न जाने अचानक कहाँ से धैर्य आया..? भूदेव को अच्छा मुहूर्त पूछा। सर के समीप गयी, माथे पर हाथ फेरकर कहा कि 'अंतिम श्‍वास को और थोड़ी देर रोक दीजिए, अच्छे मुहूर्त पर अंतिम प्रवास आरंभ करना।' सर ने अचानक नेत्र खोले, अत्यंत दयार्द्र और तेजस्वी नजर... अंतिम विदाई लेते समय की झलक प्रस्फुटित हुई। मेरे भीतर त्रयोदशाक्षरी मंत्र चल रहा था। अकस्मात मेरे नेत्र भृकुटिमध्य में खिंचकर ऊर्ध्व हुए। मुझे लगा कि जैसे आसपास का वातावरण एक दिव्य प्रभामंडल में बदल गया हो, दिव्य स्वर गूँजने लगे..जैसे कि भगवान विष्णु का गरुडारूढ दर्शन हुआ हो और उन्होंने हाथ बढ़ाकर सर को साथ में ले लिया। सर ने सस्मित मुद्रा से धुंधली वाणी में अंतिम शब्द उच्चारे..'आता हूँ– श्रीराम...!'

गुरु–सत्ता का उद्बोधन : बना जीवन भर का अवलंबन

उसके पश्चात मासिक श्राद्ध तक आसपास क्या चल रहा है, क्या हो रहा है– कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। निरंतर राम नाम का जाप भीतर चलता रहा और एक बार भी अश्रु आँखों के बाहर नहीं आये। तेरहवें दिन पूज्य गुरुजी स्वयं पधारे। आपके आगमन से और श्रद्धांजलि सभा में आप के इस कथन से कि 'आदि शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद, छत्रपति शिवाजी महाराज जैसे लोकहितकारी व्यक्ति अल्प आयुकाल में ही अपना जीवनध्येय पूर्ण करके अधिक उच्च हितकारक ध्येय हेतु नूतन देहसाधन धारण करते हैं, इस जन्म के सारे कर्मभोग यहीं पर समाप्त करके!'... बच्चे एवं मैं अधिक आश्‍वस्त हुए, कोई चिंता–भय–दु:ख– दर्द रहा ही नहीं। केवल मानवी जीवन की क्षणभंगुरता तथा जीवन की कृतार्थता क्या है, इसकी गहराई दृढ़ हुई ..! 'श्रीराम..!!'

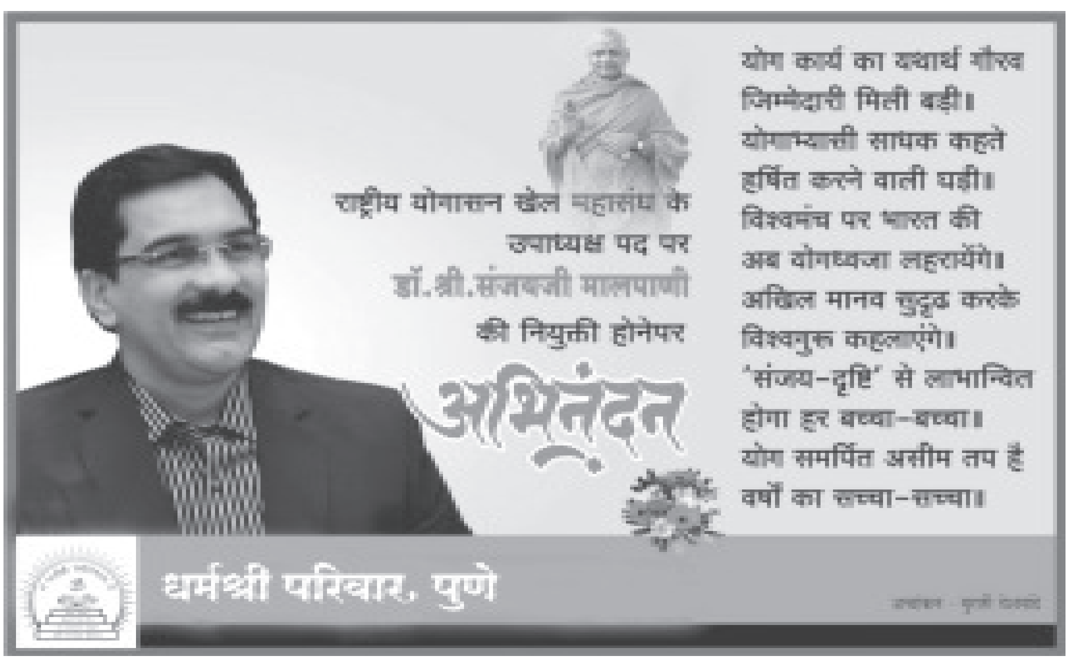

परम गुरुभक्त जाधव सर

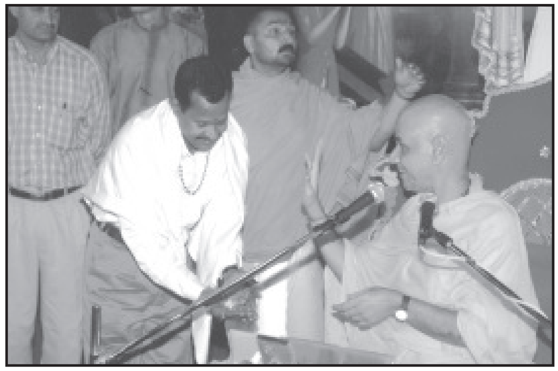

उनकी गुरु भक्ति एवं गुरु निष्ठा अपार थी। प्राणायाम में उन्हें प्रवीणता प्राप्त थी। उन्होंने जिस तरह उसमें नित-नवीन तथा अज्ञात शोध कार्य करके सुगमता पूर्वक हम लोगों तक पहुँचाया, उसके लिये हम आजीवन उनके ऋणी रहेंगे। उनकी कक्षा की एक बहुत बड़ी विशेषता यह थी कि सबका ध्यान पूरी तरह से कक्षा में ही केन्द्रित रहता था और इस कारण समय का पता ही नहीं चलता था।

- डॉ. विजया गोड़बोले

गुरुनिष्ठा और योगबल का एक अद्‌भुत प्रसङ्ग!

पूज्य गुरुदेव वापी में आदरणीय काबराजी की फैक्ट्री के भूमिपूजन कार्यक्रम में पधारे थे। गुरुदेव की सेवा का सौभाग्य मुझे प्राप्त था। वे प्रात: काल की बेला थी। इस समय गुरुदेव अपने ठाकुरजी की पूजा करते हैं। सभी तैयारियाँ हो जाने के उपरांत नित्य की भाँति चलने वाली पूजा के लिए गुरुदेव ने मुझे आदेश दिया कि पूजा में १ घण्टे का समय लगेगा। इस समय किसी से मिलना संभव नही होगा। ऐसा कहकर उन्होंने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया।

मैं उनके कक्ष के बाहर बैठा रहा। कुछ समय पश्चात सर आये। उन्होंने गुरुदेव से मिलने की अभिलाषा जताई और मुझसे कहा कि उन्हें गुरुदेव से कुछ अति आवश्यक बात करनी है। मैंने असमर्थता जताते हुए उत्तर दिया कि गुरुजी एक घण्टे से पहले नहीं मिल सकते और इस समय मैं आपका संदेश भी गुरुदेव तक नही पहुँचा सकता। मेरी बात सुनने के बाद सर ध्यान की मुद्रा में वहीं बैठ गए। मैं पुस्तक पढ़ते हुए वहीं बैठा रहा!

५-१० मिनट बाद सर ने मुझसे कहा कि मैंने गुरुदेव को सूचित कर दिया। मैं घबरा गया कि कहीं उन्होंने दरवाजे पर दस्तक तो नहीं दे दी। लेकिन वे तो अपनी जगह से उठे भी नहीं थे। फोन पर भी बात नहीं कर सकते; क्योंकि गुरुजी का सेलफोन मेरे पास था। आश्चर्य से मैंने पूछा कि आपने गुरुजी को कब और कैसे सूचित किया? सर कुछ बोले नहीं, केवल स्मित हास्य कर दिया। और तभी गुरुदेव ने दरवाजा खोलकर मुझसे पूछा कि क्या जाधव सर आये हैं? मैंने उत्तर दिया, जी हाँ। गुरुदेव ने कहा उनको अंदर भेज दो।

यह सर की गुरुनिष्ठा और योगबल का ही परिणाम था। सर की योगसाधना और तपश्चर्या के बारे में जो बातें लोगों से सुनता था, उसकी अद्‌भुत अनुभूति मुझे स्वयं उस दिन प्राप्त हुई थी।

- अधिवक्ता विजय उपाध्याय, हरिद्वार

श्रद्धांजलि

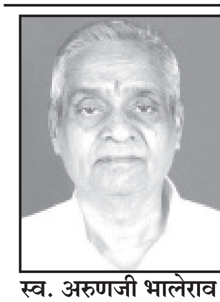

स्व. अरुणजी भालेराव

पुणे के सांस्कृतिक क्षेत्र के एक ज्येष्ठ कार्यकर्ता एवं आदर्श संघटक **अरुणजी भालेराव का दि. ५ अगस्त २०२०** को स्वर्गवास हुआ। प.पू. स्वामीजी के कथा-प्रवचनादि उपक्रमों के आयोजन में आपने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। गणेशोत्सव में ऋषिपंचमी के दिन २५-३० हजार माता-बहनों द्वारा सामूहिक अथर्वशीर्ष पाठ तो उनके संगठन-कौशल्य का चिरस्मरणीय स्मारक रहेगा। उनकी स्मृति में भावभीनी श्रद्धांजलि!

आदरणीय सर!

आज आप नहीं हैं और फिर भी आपसे कुछ बातें करने का दिल कर रहा है।

१९९१ में पहली बार शिविर में जब आपको देखा तब आप सुबह नि:युद्ध सिखाते थे, और बाकी सत्रों में मुख्य रूप से नियुद्ध से जुड़े सत्रों का नेतृत्व करते थे। कोलकाता के उस प्रथम शिविर में ध्यान का सत्र स्वयं पूज्य गुरुदेव ही लेते थे। अंतिम दिन आपने पेट से बाइक क्रासिंग का प्रात्यक्षिक खुद दिया था और तब से हम बच्चे आपको सुपर मैन ही समझने लगे। फिर तो आपका इतना प्रभाव पड़ा कि मेरे सहित अनेकों विद्यार्थियों ने कहीं न कहीं कराटे क्लास जॉइन कर लिया। शांत रहकर भी अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डाल देने की अद्भुत कला आप में थी।

फिर दूसरा शिविर, जिसमें हमने किला जीतने का अद्भुत खेल खेला था। उस शिविर में विनोद और मुकेश नाम के बड़े शरारती शिविरार्थी थे। सबकी नाक में दम किया हुआ था उन्होंने। लेकिन आपने उनको नि:युद्ध के सत्र में लिया और इन दोनों का तो जैसे जीवन ही बदल गया। जिनके बारे में सभी का ऐसा विचार था कि इनको शिविर से निकाल देना चाहिए उनको आपने जीवन की ऐसी राह दिखा दी कि आज ये दोनों कोलकाता के अनेक विद्यालयों में कराटे शिक्षक के तौर पर लोकप्रिय हो गए हैं।

धीरे धीरे अब हम कार्यकर्ता बन चुके थे। और अब आपका एक नया रूप देख रहे थे। समझ में आया कि आप हँसते भी हैं और कार्यकर्ताओं के कक्ष में हंसी-मजाक-विनोद भी करते हैं। मुझे याद है कि आप वरिष्ठ कार्यकर्ता हमारे सामने ही वो बातें मराठी में कर लिया करते थे जो आप हमें बताना नहीं चाहते थे। फिर हमारी तरफ देख कर हँसते थे। बाद में पता चला कि आप कोलकाता शिविर में धड़ल्ले से सुबह-शाम बनने वाली आलू की सब्जी के बारे में बातें कर रहे थे।

कोलकाता में हम सभी बिल्कुल युवा बल्कि किशोर कार्यकर्ता थे। तब शुरुआत के समय मे ही आपने जो महत्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया था उसमें से एक था कि कभी भी किसी भी बालिका शिविरार्थी या साथी महिला कार्यकर्ता से ४ से ६ फिट की दूरी से बात करनी चाहिए। बाद में इसे आपने 'aura' क्या होता है ये बताकर समझाया था। आपकी वह बात कब मेरे स्वभाव का हिस्सा बन गया पता ही नहीं चला।

फिर धीरे धीरे राष्ट्रीय/समसामायिक मुद्दों पर चर्चाएं होने लगीं। राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा-विमर्श के लिए मैंने Nation First नाम का एक व्हाट्सएप्प ग्रुप बनाया था। इसमें अपने-अपने क्षेत्र के प्रबुद्ध लोग शामिल थे। आपको मैंने उस ग्रुप में जोड़ा। आप बहुत ही कम शब्दों में उस ग्रुप में अपनी बात रख दिया करते थे। और जिस विषय में जानकारी नहीं है उस बारे में अनेक बार वहाँ के सदस्यों के सामने अपनी शंका भी रखते थे। आपके परलोकगमन की सूचना जब मैंने उस ग्रुप में डाली तब सभी सदस्य शोक में डूब गए। सर, आपका नाम ग्रुप से भले डिलिट हो जाये लेकिन हमारे मन में तो हमेशा के लिए 'saved' रहेगा!

पूज्य गुरुजी के साधक शिष्यों में तो आप सिरमौर थे। उनके अत्यंत प्रिय और कृपापात्र होने का सौभाग्य जो आपको मिला सर वो असल में आपके कठिन परिश्रम, साधना, श्रद्धा-समर्पण और जिज्ञासु वृत्ति का परिणाम था।

प्रज्ञासंवर्धन के माध्यम से एक ऐसा अवसर मिल गया कि जिसके कारण आपसे कई दिनों तक घंटों-घंटों केवल प्राणायाम-योग-साधना के बारे में ही चर्चा होती रही, अभ्यास करवा-करवा कर आपने मुझे पहले सिखाया ताकि मैं सही-सही समझ कर लिख भी सकूँ। गीता परिवार को आपने एक अनमोल धरोहर दी – ✻ प्रज्ञा संवर्द्धन प्राणायाम और योगमय व्यवहार ✻ – की। मेरा सौभाग्य है कि मैं इस प्रक्रिया का एक हिस्सा बना।

इतने सालों में एक अनुभव ये भी आया कि कभी भी आप किसी की आलोचना नहीं करते थे। यदि किसी के साथ 'मतभेद' भी हो तो भी आप उसे ''मनभेद'' तक पहुँचने नहीं देते थे।

आज सोच रहा था कि कलकत्ते के दूसरे शिविर वाले विनोद, मुकेश इत्यादि को आपके बारे में बताऊँ। किन्तु अब कोई संपर्क ही नहीं रहा उनसे। लेकिन ऐसे ये अकेले थोड़े ही हैं, देश भर में ऐसे सैकड़ों विनोद और मुकेश हैं जिनके जीवन में अनुशासन और लगन का संस्कार करके आपने उनका जीवन ही बदल दिया। ऐसे हजारों बच्चों, युवकों, कार्यकर्ताओं के जीवन में आप हमेशा जीवित रहेंगे सर..

अश्रुपूर्ण आंखों से आपको भावभीनी श्रद्धांजली

– ✻ गिरीश डागा ✻

मुझे नया जीवन देने वाले जाधव सर

स्व. आदरणीय जाधव सर से जो मिला वह संपूर्ण जीवन के लिये; बल्कि यदि मैं ये कहूँ कि मुझे ''जीवन देने वाला'' था, तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी।

सगुण ध्यान कैसे करें:–

एक दिन वर्ग में सगुण ध्यान में मंदिर के रामजी के दर्शन कैसे करने और ध्यान में उसी रूप को बारीकियों के साथ देखने का प्रयास करना इस पर सर ने मार्गदर्शन दिया। उसके दूसरे या तीसरे दिन ही मैं मंदिर में दर्शन कर रही थी और संयोग से सर भी मंदिर आये। दर्शन करने पर मुझे रोक कर बताया कि दर्शन कैसे लेना, क्या देखना, एकाग्रता का प्रयास कैसे करना। आज कहीं भी बैठ कर रामजी को याद करती हूँ, तो ऋषिकेश के रामजी सामने नजर आते हैं।

सर के साथ आदरभाव से जुड़ने का मेरे लिये एक बड़ा कारण था प.पू.गुरुजी के प्रति सर की अपार श्रद्धा ही नहीं; बल्कि भक्ति तक जाने वाला शिष्य भाव!

जीवनदायी प्राणायाम :–

१ फरवरी २०२०। मुझे बुखार और खांसी की समस्या हुई। जाँच करते ही डॉक्टर ने तुरंत कहा, ''दीदी के लिये VIP room तैयार कराइये।'' इसके बाद और भी अधिक टेस्टिंग वगैरह करके मुझे आई.सी.यू. में भेज दिया गया। दो दिन बाद जब डॉक्टर ने जाँच की तो बोले, can't imagine how she could be able to take a deep breath that too with cheerful face, तब मेरे भाई ने बताया कि मैं गत २ वर्षों से नियमित रूप से ३०–४० मिनट प्राणायाम करती हूँ। ये सुनकर डॉक्टर का कहना था कि केवल इस कारण ही आप इतनी जल्दी सामान्य होकर घर जा रही हैं कहना नहीं होगा कि ये सर के ही प्रशिक्षण और प्रेरणा का चमत्कार था।

– **श्रीमती जान्हवी केलकर,** औरंगाबाद

जाधव सर : एक दीपस्तंभ

– **योगेश मुंदड़ा,** सातारा, ५जी डैन ब्लैकबेल्ट

कराटे के क्षेत्र में आदरणीय 'सर' का एक ऐसा विस्तृत विद्यार्थी–परिवार है; जिसमें असंख्य 'ब्लैकबेल्ट' विद्यार्थी है। उन्हीं असंख्य विद्यार्थियों में से एक मैं – सबसे पुराना और सबसे सीनियर विद्यार्थी हूँ।

जाधव सर से १९८८ में पहली बार उनसे भेंट हुई। गया तो था मैं उनके पास कराटे की कला सीखने; किंतु जीवन जीने की कला भी सर ने ही सिखाई।

कराटे और अध्यात्म यात्रा :–

सर के साथ ३२ वर्ष का प्रवास कब हो गया पता ही नहीं चला। उनके साथ अनेक कराटे स्पर्धाओं में सहभागी होने का और बाद में आयोजन करने का अवसर मुझे मिला। सर के कारण ही पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी के दर्शन मुझे हुए और आदरणीय संजूभैया मालपाणी से परिचय हुआ। और गीता परिवार से नाता जुड़ गया।

वह अंतिम मुलाकात :–

अभी तो बहुत कुछ सीखना बाकी था कि तभी ५ अक्टूबर २०१९ को सोलापुर से प्रभुराज का फोन आया। सर अस्पताल में भर्ती हैं ICU में। विश्वास ही नहीं हुआ। रात ३ बजे सोलापुर पहुँचने पर मैं सीधे अस्पताल पहुँचा। कुछ देर उन्हें देखते रहने के बाद मैं वहीं से पीछे लौटने ही वाला था कि सर ने आँखें खोलीं। ''अरे योगेश! इतनी रत को इतने दूर से आने की क्या आवश्यकता थी? कुछ नहीं हुआ है मुझे। सिर्फ पेट दुख रहा है। दो दिन में ठीक हो जाऊँगा।''

उसी दिन दोपहर से सर की तबीयत बिगड़ने लगी। फिर हमने ग्रैंडमास्टर श्रीनिवासन को फोन करके सर के स्वास्थ्य की पूरी जानकारी दी। यह जानते ही ग्रैंडमास्टर हैदराबाद से निकल पड़े। ग्रैंडमास्टर के साथ सर की अंतिम मुलाकात का वो प्रसंग जो मैंने देखा, वो दिल दहला देने वाला था। इतने कष्ट में होने के बाद भी सर ने ग्रैंडमास्टर का अभिवादन किया। उनके वश में होता तो वे उठ खड़े होते! ग्रैंडमास्टर अपनी अश्रुधारा रोक न पाए।

आखिर ८ अक्टूबर को दशहरे के दिन मेरे जीवन को सोना करने वाले इस असाधारण गुरु ने अंतिम विदाई ली। ऐसे अद्वितीय नियुद्धाचार्य और योगाचार्य को अंत:करण से भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

सर हमारे आस-पास ही हैं...

– **सुनील माहेश्वरी,** नई दिल्ली

आदरणीय श्री सुरेश जाधव सर, जिनको याद करते ही आज भी आँखों में एक चमक आ जाती है; लेकिन साथ ही उनकी स्मृति अश्रु भी ले आती है।

जाधव सर के व्यक्तित्व को अगर थोड़े में बोला जाए, तो एक विज्ञान-युक्त साधक, एक उच्च कोटि के शिक्षक एवं एक वात्सल्य भरा व्यक्तित्व, यही थे वे।

सर से मेरी मुलाकात ११ साल पहले ऋषिकेश के साधना शिविर में हुई थी। सभी शिक्षकों के व्यक्तित्व से वे कुछ अलग थे। सधी हुई चाल, चौड़ा सीना एवं शांत आँखें।

एक दिन वे स्वयं ही मेरे पास आए , जैसे कि उन्होंने मेरा मन पढ़ लिया हो और बोले– ''भाई कंधे सीधे करके क्यों नहीं चलते तुम।'' कुछ जवाब ना दे पाया मैं, लेकिन प्राण साधना का पहला सूत्र वे मुझे दे गए – ''प्राण साधोगे, तो शरीर सधेगा और शरीर साध लोगे तो प्राण सध जाएंगे।''

''प्रातः के सात्विक समय जब मन शांत होता है, तब प्राणायाम एवं निर्गुण निराकार ब्रह्म की साधना तथा सायं के समय जब मन और शरीर थका होता है, तब सगुण साकार ईश्वर की साधना'', अपने आप में एक विलक्षण शोध है यह।

साधना में छिपे थे कई सूत्र :

सर की ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण साधना, जो सब साधकों को वे प्रसाद स्वरूप दे गए, अनुपम है। साधना करते-करते साधक को जब उनका वास्तविक रहस्य अपने अनुभव द्वारा ज्ञात होता है, तभी वह सर के ज्ञान-विज्ञान को समझ सकता है।

''प्रात: के सात्विक समय जब मन शांत होता है, तब प्राणायाम एवं निर्गुण निराकार ब्रह्म की साधना तथा सायं के समय जब मन और शरीर थका होता है, तब सगुण साकार ईश्वर की साधना'', अपने आप में एक विलक्षण शोध है यह।

कपालभाति और भस्त्रिका प्राणायाम में जहाँ साधक क्रमश: स्वाधिष्ठान चक्र एवं मणिपुर चक्र का साधन करता है, वहीं इन प्राणायामों के साथ पंचतत्त्वों एवं इड़ा और पिंगला, इन सब को एक ही सूत्र में बाँध देना और एक क्रम साधना जहाँ साधक मूलाधार से सहस्त्रार तक नित्य विहार करता है, यह तो बस जाधव सर का ही सूक्ष्म विज्ञान था। गीता के कर्मयोग और योगारूढ़ होने के विचार को सर ने मानो साधना में पिरो दिया।

शिष्यों की साधना ही सर्वोपरि थी :–

गीता, योगसूत्र एवं प्राणायाम के बारे में बात करते, पूछते, समझाते और अपने विचार उनको बताते हुए समय ऐसे बीत जाता कि पता ही नहीं चलता। अपने शिष्यों की साधना से तो मानो उनके मन के तार जुड़े हुए थे। प्रात: काल की साधना अपने घर में करते हुए दो बार उनके स्वयं के फोन मेरे पास आए, मानो वह सोलापुर से ही मेरा निरीक्षण कर रहे थे। पूछने लगे– क्या कर रहे हो, सुनील? मैंने जब उनको अपनी साधना के बारे में बताया तो कहने लगे, अच्छा कर रहे हो, ऐसे ही करते रहना।

साधक स्वच्छन्द तो तब हो जाता है, जब उसकी साधना पूर्णता को प्राप्त होती है। फिर तो वह हंस की तरह उड़ना सीख जाता है और मूलाधार, शरीर एवं इच्छा की आवश्यकता ही नहीं रहती। यही स्वतंत्रता तो संन्यास है।

हमारे जाधव सर भी कर्मयोगी से कर्म-संन्यासी हुए हैं। हंस स्वच्छंद है अब!! गीता के कथनानुसार लोक संग्रह के लिए वे स्वयं अपनी स्वच्छंदता एवं स्वतंत्रता छोड़ेंगे और हम साधकों के पास वापस आएंगे ही। तब तक साधकों के साथ वे हंस बने आस-पास ही हैं! बस उन्हें कहना भर हैं और जो प्रश्न मन में हैं, उनका उत्तर स्वयं ही आएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

उनके बारे में लिखते हुए भी आज मेरी आँखें बार-बार नम हुए जा रही हैं। अंत में जाधव सर को स्मरण करते हुए पूज्य गुरुदेव को प्रणाम और कोटि-कोटि धन्यवाद कि वे सर जैसे शिक्षक को ढूंढ़ कर हम साधकों के जीवन में लाए।

मेरे अभिन्न सखा और मार्गदर्शक

– **ओम भैया दरक,** सोलापुर

आदरणीय योगाचार्य स्व सुरेशजी जाधव सर के साथ प्रथम भेंट सोलापुर के दम्माणी विद्यामंदिर में आयोजित बाल संस्कार शिविर में हुई। जुलाई १९९५, दिन था रविवार। रामभक्त जाधव सर को शिविरार्थियों को ध्यान का अभ्यास कराते देखा और फिर उसी दिन जब सर को शिविरार्थियों के साथ वार्तालाप करते हुए सुना तो उनकी सरलता, उनके ज्ञान और देश–धर्म के प्रति उनकी निष्ठा से मैं मंत्रमुग्ध हो गया। बस, उसी दिन से वे मेरे गुरुबंधु और परमसखा बन गए।

उनका योगमय व्यवहार, साधना का तपोबल, मार्गदर्शन और उनकी शांत किंतु अपनेपन से भरी वाणी, ये ऐसे गुण थे जो सभी का दिल जीत लिया करते थे। सर के मार्गदर्शन से बाल संस्कार कार्य में जो रुचि निर्माण हुई, वह जीवन बदल देने वाली थी।

आदरणीय सर अक्कलकोट निवासी सद्गुरु श्री गजानन महाराज के अग्निहोत्र आचरण से बड़े प्रभावित थे। जब–जब वे सोलापुर में रहते, तो प्रत्येक गुरुवार को शिवपुरी यज्ञस्थली पर दर्शन, ध्यान हेतु अवश्य जाते। कई बार मैं स्वयं उनके साथ अक्कलकोट जाता था। पंचमहाभूतों से लेकर अग्नितत्त्व तक और प्राणायाम से लेकर ध्यान–धारणा–समाधि तक उनके विचार और चिंतन का लाभ इन यात्राओं में मिलता था। अनेक बार हमने साथ मिलकर सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय अग्निहोत्र किया था। अग्निहोत्र के पश्चात उनके शरीर, मन, बुद्धि और वाणी में एक अद्भुत चैतन्य दिखता था। बड़े प्रसन्न होकर वे कहते कि ४५ मिनट ध्यान करने के बाद जिस स्थिति में जाता हूँ, वह अग्निहोत्र के बाद ३ से ५ मिनट में प्राप्त हो जाती है। यज्ञ–संस्कार को वे जीवन का अविभाज्य घटक मानते थे। बाल संस्कार कार्य में भी यज्ञ–संस्कार सिखाने के वे आग्रही थे। कई बार उनकी समाधि–अवस्था का मैं प्रत्यक्षदर्शी बना।

> बड़े प्रसन्न होकर वे कहते कि ४५ मिनट ध्यान करने के बाद जिस स्थिति में जाता हूँ, वह अग्निहोत्र के बाद ३ से ५ मिनट में प्राप्त हो जाती

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनीः–

आदरणीय जाधव सर का बहुआयामी व्यक्तित्व आज की युवा पीढ़ी के लिए एक दिव्य आदर्श और पथ–प्रदर्शक है। उनका शौर्य–संस्कार, व्यायाम, देशभक्ति, धर्मनिष्ठा, गौ–भक्ति, गुरुनिष्ठा, बंधुप्रेम, स्वभाव की उदारता, सरलता और सामाजिक कार्यों के प्रति उनकी जागरूकता आदि कई गुणों का दर्शन विविध घटनाओं द्वारा स्वयं मैंने किया है और इनका प्रभाव मेरे जीवन पर भी पड़ा है। सर के जीवन से प्रेरणा लेकर युवा पीढ़ी स्वयं को देश–धर्म–समाज कार्य हेतु सिद्ध करे और हम इसके लिए कार्य करते रहें, यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सर के सपनों को पूरा करना ही सच्ची श्रद्धांजलि है!

– **सुभाष कृष्णा नाईक**, गोवा

परमपूज्य गुरुदेव स्वामी गोविंददेव गिरि जी के सान्निध्य में संपन्न जाधव सर का वो अंतिम गुरुपूर्णिमा उत्सव था। अत्यंत प्रसन्न और समाधान दिख रहे थे सर! गुरुपादुका को अपने माथे पर रखकर ले जाते समय उनके मुखमंडल पर एक अलग ही आभा .. एक परमानन्द और धन्यता का भाव दिख रहा था..!

गोवा के ईसाईकरण का जवाब – गीता परिवार:

''हमें बहुत-से कार्य करने हैं'' ऐसा लगता है कि जैसे ये संदेश नहीं; बल्कि वो आदेश था, जो वे जाते-जाते हमें दे गए। 'सर्व कल्याण योग' और 'प्रज्ञासंवर्द्धन' के बारे में एक बड़ी योजना अंतिम दिनों में सर के मन-मस्तिष्क में थी, जिसे मूर्त रूप देने के लिए वे परिश्रम कर रहे थे। वे कहा करते थे कि इससे सर्वकल्याण योग और प्रज्ञासंवर्द्धन का लाभ हजारों बालकों तक पहुँचेगा। जाधव सर की साधना केवल अपने लिए नहीं थी; बल्कि वास्तव में ये 'सर्व कल्याण' के लिए ही थी। परशुराम भूमि गोमान्तक की तरह प्रज्ञासंवर्द्धन योग भी उनके हृदय में बसता था।

> गोवा का ईसाईकरण हुआ है, इस पर वे रोष भी व्यक्त करते थे और कहते थे कि गीता परिवार को गोवा के हर परिवार तक पहुँचाना ही इसका उत्तर है और इस समस्या का समाधान भी।

गोवा के प्रति उनका प्रेम उनके हर शब्द और कृति में व्यक्त होता था। साथ ही गोवा में पश्चिमी संस्कृति के प्रचार-प्रसार पर वे चिंता भी व्यक्त करते थे। जिस प्रकार से गोवा का ईसाईकरण हुआ है, इस पर वे रोष भी व्यक्त करते थे और कहते थे कि गीता परिवार को गोवा के हर परिवार तक पहुँचाना ही इसका उत्तर है और इस समस्या का समाधान भी। हमें एक दिन पूज्य गुरुदेव को गोवा लेकर आना है, उनका भव्य कार्यक्रम आयोजित करना है। लेकिन उसके लिए पहले गीता परिवार का कार्य भी यहाँ बढ़ाना होगा।'' आज सर हमारे बीच नहीं हैं; किंतु हमें चिंतन-मनन करके उनके सपनों को पूर्ण करने का कार्य अब करना है।

पिछली हनुमान जयंती के अवसर पर सर एक दिन के लिए गोवा आये थे। कई सारे विषयों पर चर्चा हुई। सुबह आने से लेकर शाम को उन्हें विदा करने तक दिन भर मैं उनके साथ ही था। किसने सोचा था कि ये 'अंतिम विदाई' होगी!

सर एक योद्धा थे। एक योद्धा के लिए आवश्यक हर प्रकार के दिव्यास्त्र उनके पास थे। वे विचारों के धनी थे, अध्ययनशील थे। अष्टांगयोग पर उनका प्रभुत्व था। वे एक श्रेष्ठ साधक थे। अध्यात्म की उच्चतम अनुभूति उन्होंने की थी। दुर्लभ युद्धकला कळ्ळारिपयटू के वे ज्ञाता थे। मार्शल आर्ट में '**शिहान**' की श्रेष्ठ उपाधि उन्होंने प्राप्त की थी। भगवद्गीता का उन्होंने गहरा अध्ययन किया था। क्या नहीं था उनके पास! ज्वलंत राष्ट्रप्रेम, अडिग धर्माभिमान, स्पष्टवादिता, सत्य के लिए खड़े होने का अदम्य साहस, महान गुरु का अभय देने वाला आशीर्वाद और इन सबके बावजूद भी स्वभाव की विनम्रता और मितभाषिता! ऐसे मित्र, मार्गदर्शक और दार्शनिक व्यक्ति का साथ मुझे मिला, ये मेरा सौभाग्य था! उनके सपनों को पूर्ण करने के लिए पूज्य गुरुदेव अब हमें आशीर्वाद दें, ईश्वर हमें सामर्थ्य दें, यही प्रार्थना है।

कर्मयोगी श्री सुरेशजी जाधव सर

– शैलेश शांतय्या स्वामी, सोलापुर

शिहान स्व. सुरेशजी जाधव सर के विषय में मन में भावनाओं का ऐसा सागर उमड़ रहा है कि क्या लिखूँ और कहाँ से शुरुआत करके कहाँ अंत करूँ, यही समझ नहीं आ रहा। उत्तम गुरु और उत्तम शिष्य का उदाहरण यदि एक साथ एक ही व्यक्ति में देखना हो, तो जाधव सर को देखना चाहिए। मैं स्वयं जाधव सर का शिष्य हूँ और बाद में विद्यार्थियों का प्रशिक्षक भी बना। विद्यार्थी के जीवन को कैसे सँवारा जाता है, इसके लिए कितना सजग रहना पड़ता है और स्वयं कितने कष्ट सहन करने पड़ते हैं, ये सब कुछ जाधव सर के जीवन से हम सीख सकते हैं।

मेरी बेटी के कारण मैं जाधव सर के संपर्क में आया। जो मेरी बेटी के गुरु थे, वे मेरे भी गुरु हो गए। माता-पिता के समान जीवन में यदि कोई दूसरा स्थान होता है, तो वह गुरु का होता है और जाधव सर के रूप में मुझे मेरे गुरु मिले, उनके साथ सहवास का अवसर मिला, उनका आशीर्वाद मिला, यही मेरे जीवन की धन्यता है।

एक धर्मप्रेमी और राष्ट्रभक्त व्यक्ति कैसा होना चाहिए, इसका उदाहरण सर में देखने को मिलता है। उनके सभी विद्यार्थियों में उन्होंने ये दोनों भाव जाग्रत किये। अपनी अनुशासनप्रियता के कारण ऊपर से कठोर लगने वाले सर का हृदय बहुत ही कोमल था। क्लास लेते समय के सर को जब क्लास के बाद उन्हीं विद्यार्थियों से सहज हँसी-मजाक करते हुए देखता, तब आश्चर्य होता कि क्या ये वही सर हैं जो अभी अत्यंत गंभीरता और कठोरता से क्लास ले रहे थे।

सोलापुर विद्यापीठ में 'प्रज्ञा संवर्द्धन व सेल्फ डिफेंस' का पाठ्यक्रम जब शुरू किया गया, तब सर स्वयं और संगीता दीदी ने मुझे इसका प्रशिक्षण दिया। इस दौरान सर के साथ निरंतर एक लंबा समय बिताने का अवसर मिला। विद्यापीठ में प्रज्ञा संवर्द्धन सिखाते हुए मेरे विद्यार्थियों को तो इसका लाभ मिला ही, साथ में मेरा व्यक्तिगत विकास भी हुआ।

सर इस तरह अचानक हमारे बीच से चले जाएंगे, ऐसा कभी सोचा भी नहीं था। यह एक असहनीय पीड़ा थी। किंतु सर की श्रद्धांजलि सभा में पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी की वाणी से ऐसा विश्वास मिला कि वे लौटकर फिर से आएँगे।

ऐसे हमारे पूजनीय गुरु शिहान श्री सुरेशजी जाधव सर को मेरा प्रणाम।

प्रज्ञा संवर्द्धन योग के भागीरथ

आदरणीय सुरेशजी जाधव सर का कर्तृत्व असाधारण था। विदर्भ के अनेक हिस्सों में सर के साथ प्रज्ञासंवर्द्धन शिविरों के आयोजन और उनमें कार्य करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। कई सारे लोगों को एक साथ प्रशिक्षण देते हुए भी दूर बैठे किसी शिविरार्थी की गलती को वे पकड़ लेते थे। ये उनकी एक अद्भुत क्षमता थी।

विदर्भ के आमगाँव में शिविर हो जाने के बाद उन्होंने कहा था कि अब कुछ शिविर वनवासी क्षेत्रों में भी होने चाहिए। मेलघाट एक आदिवासी क्षेत्र है और सर चाहते थे कि प्रज्ञासंवर्द्धन का अगला शिविर अब वहाँ के विद्यालयों के विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए हो। सर ने मुझे संगीता दीदी के साथ कार्यक्रम का नियोजन करने को कहा था। दीपावली के बाद ये शिविर करेंगे, ऐसा तय भी हुआ था; किंतु हमारा ये सपना अधूरा छोड़कर सर चले गए अनंत यात्रा पर। अब संगीता दीदी के साथ मिलकर, हम ये पूरा करेंगे। पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद हमें सामर्थ्य और क्षमताएँ देगा, ऐसा विश्वास है।

– शोभा हरकुट, अमरावती

'सर' गुरु ही नहीं पिता समान भी थे!

जाधव सर! केवल नाम लेने मात्र से मेरे बचपन से आज तक के जीवन की जैसे कोई फिल्म ही मेरी आँखों के सामने आ जाती है। सातारा के निर्मला कान्वेंट स्कूल में हम चार-पाँच बच्चों को संगीता दीदी का विशेष साथ और लगाव मिला।

मुझे याद है बजरंग दल के माध्यम से सर के नेतृत्व में महाराष्ट्र से एक बड़ा दल अमरनाथ संरक्षण यात्रा के लिए गया था। तब मैं १३ वर्ष का था और बड़ी जिद्द करके सर के साथ गया था। सर के नाम पर घर से भी जाने की अनुमति मिल गयी थी। इस यात्रा में अचानक बर्फबारी होने लगी और १७ दिनों तक हम बर्फ के बीच फँसे रहे, चरों तरफ बर्फ ही बर्फ फैला हुआ था और सारे रास्ते बंद थे। ऐसे विपरीत समय में सर के नेतृत्व गुण का मुझे दर्शन हुआ। उन्होंने अपनी टीम का हौसला बनाये रखा। उन्होंने कहा कि खुद पर भरोसा रखो, तो भगवान भी साथ देते हैं। उनका यह एक वाक्य मेरे जीवन का मंत्र बन गया।

केवल सर के बारे में ही यदि कहा तो बात अधूरी ही रहेगी. संगीता दीदी के बिना सर अधूरे थे। संगीता दीदी ने शुरुआत से हमेशा सर का साथ दिया। उन पर विश्वास बनाये रखा। उनके प्रत्येक कार्य में दीदी बराबरी की भागीदार रही।

सर को हमारी भावभीनी श्रद्धांजलि

– **ऋषिकेश राजेंद्र बागडे**, नोर्वे

समय कम था और देने को बहुत कुछ!

आदरणीय सर से मेरी पहली मुलाकात संगमनेर में हुई थी, जब मैं गीता परिवार के कार्यकर्ता शिविर में शिविरार्थी बनकर गयी थी। इसके बाद ऋषिकेश के गीता साधना शिविर में, गीता परिवार के अन्य अनेक शिविरों में और गीता परिवार की बैठकों में सर से निरंतर मिलना होता रहा। वे गीता परिवार के उपाध्यक्ष थे।

सर बड़े मितभाषी थे। उनके गंभीर व्यक्तित्व को देख शुरुआत में उनसे डर भी लगता था; किंतु जैसे-जैसे उनसे संपर्क बढ़ता गया; वैसे-वैसे हर बार उनके व्यक्तित्व के नए-नए पहलुओं से भी परिचय होता गया। उनका व्यापक अध्ययन, उनके शोध-अनुसंधान, सभी के लिए अपनापन और कठिन विषय को भी सरल भाषा में समझा देने की उनकी अद्भुत कुशलता उनके लिए एक अनन्य आदर का भाव उत्पन्न कर देते थे। उनके हर वर्ग समय पर ही शुरू होते थे; किंतु प्रशिक्षण की प्रक्रिया में वे इतने मग्न हो जाते थे कि घड़ी का ध्यान नहीं रहता। अब ज्यादा कुछ नहीं कह सकूँगा। ऐसे अनमने भाव से वे वर्ग समाप्त करते थे। आज जब पीछे मुड़कर देखती हूँ तो ऐसा लगता है कि शायद उन्हें भी कहीं न कहीं ऐसा लगता होगा कि उनके पास समय बहुत कम है और देने के लिए बहुत कुछ!

अपने विषय पर उनका पूर्ण अधिकार था। प्रज्ञासंवर्धन शिविरों में तो वे जैसे एक अलग ही भाव-विश्व में होते थे। शिविरार्थियों की हर शंका का समाधान वे प्रमाण के साथ करते थे। उनकी बातों में आध्यात्मिकता का एक आधार होता था। वे एक योगी ही थे, इसीलिए स्वयं पूज्य स्वामीजी ने उन्हें "**योगाचार्य**" की पदवी दी थी।

देश के सर्वश्रेष्ठ मार्शल आर्ट विशेषज्ञों में से एक होते हुए भी उनका जीवन अत्यंत सादगी पूर्ण था। ऐसे महान योगाचार्य और मार्गदर्शक का इस प्रकार अचानक चले जाना अत्यंत पीड़ादायक है। गीता परिवार और साधना शिविर के साधकों के लिए तो यह एक अपूरणीय क्षति है। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे, यही प्रार्थना है।

– **हेमा सारडा**, अनगर

सादर श्रद्धांजलि

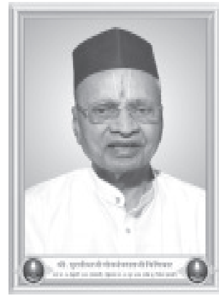
स्व. मुरलीधर जी मणियार (सोलापूर)

श्री राजगोपाल जी मणियार के पिताजी आदरणीय **स्व. मुरलीधर जी मणियार (सोलापूर)** के देहावसान की दुःखद वार्ता ९२ वर्ष की आयु को देखते हुए अनपेक्षित न होनेपर भी उनके बढिया स्वास्थ्य को देखते हुए अकस्मात् जैसी लगी! वे मेरे बचपन के मित्र स्व. भाई रामप्रसाद के मामाजी होने के कारण हम भी उन्हें मामाजी ही कहते थे! अनुशासनप्रिय, स्पष्टवक्ता, परम धार्मिक, कुशल व्यवहारी तथा सर्वदा प्रसन्नचित्त एवं मधुरभाषी यह व्यक्तित्व सदैव स्मरणीय रहेगा! उनकी परमगति एवं परिवार के शांतिलाभार्थ प्रभुचरणों में प्रार्थना! **पू. स्वामी गोविंददेव गिरि**

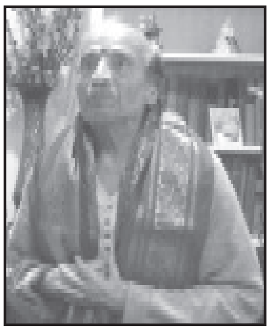
स्व. डॉ. शरदजी रेगे

पिछले लगभग पचीस वर्षों से प.पू. स्वामीजी विदेशों में ज्ञानयज्ञार्थ जा रहे हैं। अमेरिका के न्यूयॉर्क इलाके में जब भी आप जाते, आपका निवास डॉ. शरदजी रेगे के घर ही रहता। डॉ. रेगे जी पचास से भी अधिक वर्ष अमेरिका में बसे एक सफल डॉक्टर रहें। वे स्वयं, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विभाजी तथा पुत्र श्याम एवं कन्या मोनिका ये सभी वहाँ के धार्मिक, सांस्कृतिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। आपका घर पू. स्वामीजी के लिए मानो दूसरा घर ही था।

गत २९ सितंबर को डॉ. शरदजी रेगे का वृद्धावस्था के कारण देहांत हो गया। पूरा धर्मश्री परिवार उनके परिवारजनों के दुःख में समवेदना प्रकट करता हुआ उनकी आत्मा को सद्‌गति दें ऐसी प्रार्थना प्रभुचरणों में करता है।

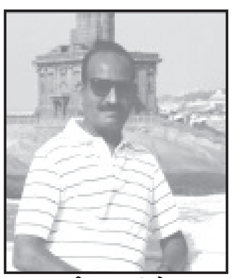
स्व. दुर्गादास जी देशमुख

आज दिनाँक ११ अक्टूबर को गीता परिवार, पुणे के उपाध्यक्ष, सद्गुरु निजानन्द महाराज वेदविद्यालय के समिति सदस्य **स्व. दुर्गादास जी देशमुख** को वर्तमान में चल रही महामारी ने अपना शिकार बना लिया जिस कारण आप हमें छोड़कर सदा के लिए विदा हो गए। भगवान उनकी आत्मा को उत्तम गति प्रदान करें। पूज्य गुरुदेव के प्रति आपकी निष्ठा देखते बनती थी।

धर्मश्री, गीता परिवार, महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान एवं संतश्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल की ओर से सादर श्रद्धांजलि एवं परिवार को इस अचानक आये संकट को झेलने के लिए ईश्वर शक्ति प्रदान करें।

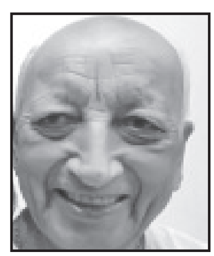
आदरणीय रामनिवास जी मंत्री

परम रामनामनिष्ठ आदरणीय रामनिवास जी मंत्रीजी का स्वास्थ्य आजकल ठीक नहीं रह रहा था पर इतने अचानक उनका देवलोकगमन अनपेक्षित ही था! उनका दुखद निधन सामाजिक कार्यकी बडी हानि है! सतत कार्यका उत्साह, अखंड प्रसन्न हास्यमुद्रा, सबसे पराकोटिकी विनम्र मिलनसारिता और भगवानमें परमश्रद्धा ये उनकी विशेषताएं अविस्मरणीय हैं! गीता भवन, महात्माजी संस्थान, वेदविद्यालय, गीता परिवार आदि धर्मसेवामें लगाकर उन्होने जीवन सार्थक किया! प्रभु उन्हे अपने श्रीचरणोमें स्थान देंगे यह विश्वास है! सादर भावांजलि!

– **पू. स्वामी गोविंददेव गिरि**

सौ. रोहिणी उपाख्य उषा वसंत बेडेकर

मुंबई के सुविख्यात बेडेकर उद्योजक परिवार की ज्येष्ठ सदस्या सौ. रोहिणी उपाख्य उषा वसंत बेडेकर ७५ वर्ष की आयु में स्वर्गलोक चल बसी। आपने अनेक धार्मिक सांस्कृतिक उपक्रमों को तथा उनके कार्यकर्ताओंको मातृतुल्य स्नेहमय आधार दिया। गत अनेक वर्षों से उनके निवास के प्रांगण में आयोजित प.पू. स्वामीजी के कथा-कार्यक्रमों में आप बडी श्रद्धा के साथ सम्मिलित होती थी। **सादर भावांजलि!**

प.पू. स्वामीजी की अनुगृहीत शिष्या एवं धर्मश्री परिवार की नागपुर निवासी एक ज्येष्ठ सदस्या **श्रीमती रजनी जी बैस** (७४) का अल्प बीमारी के कारण देहावसान हुआ। पति डॉ. विजयसिंहजी बैस के साथ आप पू. स्वामीजी के कईं उपक्रमों में सम्मिलित हुई तथा मॉडेस्टो (अमेरिका) के अपने निवासकाल में आपने उनकी कथाओंका भी आयोजन किया। **सादर भावांजलि!**

श्रीमती रजनी जी बैस

आदरणीय रामप्रसाद जी सलारपुरिया

परम आदरणीय रामप्रसाद जी सलारपुरिया के निधन की दुःखद वार्ता से मन भर आया। विद्यालय के कठिन काल में श्री कोटरीवाल जी के माध्यम से एक प्रबल संरक्षक के रूप में उनका कार्य से जुड़ना हुआ। उनमें पराकाष्ठा की सज्जनता, स्पष्टवादिता, सर्वविध जागरूकता, उदारता, प्रसन्नता तथा विचाराधिष्ठित भक्तिभाव जैसे अमूल्य गुणों का अनुभव हमनें सर्वदा किया। ऐसे दुर्लभ साथी का वियोग पीड़ादायक है। इस सन्निकट सत्पुरुष को अश्रुपूर्ण हार्दिक श्रद्धांजलि।

प्रिय आदरणीय भागीरथजी मूंदडा (नांदेड) ऐसे अचानक चल बसेंगे, यह सोचा भी नहीं जा सकता था। अकल्पनीय है ईश्वर का विधान, अनुल्लंघ्य भी। उनका देवलोक गमन केवल पारिवारिक नहीं - सामाजिक और सांस्कृतिक हानि भी है। नांदेड शहर के हर सामाजिक कार्य में तथा स्वर्गाश्रम के शिविर तथा कथा में की गई उनकी निष्काम, निरहंकार-सेवा अविस्मरणीय है! ऐसे सर्वप्रेमी एवं सर्वप्रिय साथी को असमय में खोने की वेदना अपार है, पर निरुपाय हैं। दिवंगत आत्मा को सादर साश्रु भावांजलि। प्रभुसान्निध्य के लिए प्रार्थना। ॐ शांतिः।

आदरणीय भागीरथजी मूंदडा

श्री क्षेत्र पंढरपूर के चार श्रेष्ठ सत्पुरुषों को यह महामारी लील गई। श्री रुक्मिणी मंदिर के निष्ठावान वयोवृद्ध अर्चक, परम विद्वान, प्रखर समाज प्रबोधक पूज्य **डॉ. वा. ना. उत्पात**; वेदांतशास्त्र के प्रकांड पंडित, निष्ठावान वारकरी, **परम गुरुभक्त ह.भ.प. मुरलीधरजी धूत महाराज,** निष्ठावान वारकरी **ह.भ.प. कैकाडी महाराज** तथा प्रसिद्ध समाजसेवक **सुधाकरजी परिचारक** इन महानुभावोंके दुःखद निधन से हम सभी आहत हैं। सभी की पुण्यस्मृति में सादर श्रद्धांजलि। - **पू. स्वामी गोविंददेव गिरि**

विकराल काल में अन्नदान सेवा।

डॉ. प्रकाश सोमण, न्यासी, श्रीकृष्ण सेवा निधि

करोना की वैश्विक महामारी के जो दुष्परिणाम हुए, उनमें से एक था अनगिनत लोगों की रोजी रोटी छीनी गई, विशेष कर ऐसे असंगठित वर्ग की जिन्हें आजीविका हेतु हर दिन काम करना ही पडता है। परंतु हम सभी के सौभाग्य से पूरे देश में ऐसे अनगिनत सेवाभावी न्यास, अशासकीय संगठन तथा नये गुट भी इस स्थिति का सामना करने सिद्ध हुए। फलस्वरूप इतने लंबे समय में एक भी भूखमरी का उदाहरण नहीं मिला।

हमारे पूज्यवर स्वामीजी द्वारा स्थापित श्रीकृष्ण सेवा निधि भी ऐसा ही एक सेवाभावी न्यास है जो पिछले ३६ से भी अधिक वर्षों से शैक्षिक तथा वैद्यकीय सहायता के साथ केदारनाथ अतिवृष्टि जैसे सामयिक आपात काल में भी सेवाकार्य करते आया है।

इस समय श्रीकृष्ण सेवा निधि ने अपना लक्ष्य मुख्यतया महाराष्ट्र के कर्मकांडी ब्राह्मण तथा मंदिरों के अर्चकवर्ग को बनाया। उन्हें अन्नादि सामग्री पहुँचाने हेतु एक योजना बनायी गयी जिसके अंतर्गत चार लोगों के एक परिवार को एक महिनेका परचूनी सामान पहुँचाना था जिसका व्यय लगभग रु. १५००/– था। मई २०२० के मध्य में शुरु हुई इस योजना की जानकारी प.पू. स्वामीजी के पूरे भक्त–परिवार को देकर उन्हें इसमें सहयोग का आवाहन किया गया। दूसरी ओर सर्वदूर फैले हुए भाविकों द्वारा ऐसे ब्राह्मणों की जानकारी संकलित की गयी जो वास्तव में अभावग्रस्त थे।

लॉकडाउन के कारण निर्मित यातायात पर निर्बंधों को पालते हुए एवं यातायात का व्यय भी न्यूनतम रखने के लिए स्थानीय तौर पर ही खरीदने तथा वितरण करने की नीति अपनाई गयी। विक्रेताओं द्वारा रसीद भेजी जानेपर रकम सीधे उनके बैंक खाते में जमा की गयी।

इस संपूर्ण उपक्रम की सफलता का श्रेय प.पू.स्वामीजी की प्रेरणा उनके सर्वदूर फैले हुए अनगिनत भक्तगण–जिन्होंने इस हेतु उदारतापूर्वक वित्तीय सहयोग भी दिया तथा संयोजन में भी हाथ बटाया, विभिन्न गांवों में स्थित विक्रेता इन सब को जाता है। महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के पूर्व छात्र, तत्पश्चात् वेदाध्यापक तथा वर्तमान में न्यासी वेदमूर्ति श्री. महेशजी नंदे एवं वेदमूर्ति श्री. सुजितजी देशमुख इन दोनों ने ब्राह्मणों से एवं स्थानीय कार्यकर्ताओं से संपर्क का महत्त्वपूर्ण कार्य पूर्ण समर्पण के साथ किया। विशेष उल्लेख नासिक के उद्योजक श्रीमान् वैभवजी जोशी और उनके सहयोगी श्रीमान जयंतजी भातांब्रेकर का करना चाहिए जिनके माध्यम से हम नासिक जिले के ब्राह्मण परिवारों की सेवा कर सके।

जैसे ही इस सेवाकार्य की जानकारी संपर्क माध्यमोंद्वारा सर्वदूर पहुँची अनेक विदेशस्थ भारतीय श्रद्धालुओं ने भी उसमें सहयोग की इच्छा व्यक्त की। किंतु वर्तमान में विदेशी चलन पर लदे निर्बंधों के कारण यह कठीन था। ऐसे में प.पू. गुरुदेव की अमेरिका स्थित शिष्या श्रीमती शैली मेहता ने सेवा इंटरनैशनल इस सेवाभावी संस्था के सहयोग से यह सहयोग श्रीकृष्ण सेवा निधि तक पहुँचाने का अनमोल कार्य किया।

श्रीकृष्ण सेवा निधि स्वयं को धन्य समझता है कि भगवत्कृपा, प.पू. स्वामीजी की प्रेरणा एवं सभी श्रद्धालुओं के सहयोग के बल पर पिछले पाँच महीनों में कुल रु. ४५ लक्ष से भी अधिक व्यय से वह ३००० से भी अधिक परिवारों की कुछ सेवा कर सका।

स्व. चंद्रकांतजी केले : एक संस्मरण।

डॉ. प्रकाश सोमण, न्यासी, श्रीकृष्ण सेवा निधि

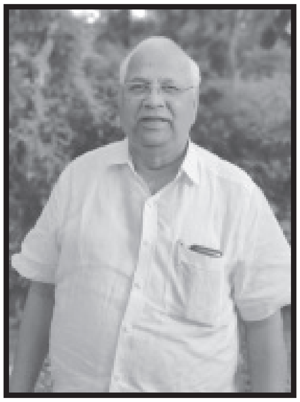

स्व. केले काका! आपके नाम के पहले 'स्व.' लिखते हुए लेखनी भी थर्रा गयी। सोचा भी न था कि यह दिन इस अकल्पित रीति से आएगा। आपके जाने का आघात आकस्मिक, असहनीय और दिङ्मूढ करनेवाला है। बस इतनाही लग रहा है- हमने बहुत कुछ अनमोल खोया है। वास्तव में क्या और कितना खोया है यह तो जैसे समय बीतेगा, ध्यान में आएगा।

केले काका की पहली स्मृति है लगभग २५-२६ वर्ष पुरानी। पू. स्वामीजी की एक कथा में आप आए और एक कुशल जवाहिरे की तरह उन्हें परखा और उनसे सदा के लिए जुड गए। उनके माध्यम से पूरा धुलिया शहर भी उनसे जुड गया, क्योंकि तब आप उस नगरी के एक गणमान्य, प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सुप्रतिष्ठित हो चुके थे। पू. स्वामीजी से जुडने के बाद आपने जो किया उससे पहले ही आप स्वयं को सिद्ध कर चुके थे।

उच्चतम शिक्षा, पैतृक सांपत्तिक ऐश्वर्य, राजनैतिक सत्ता ऐसा कुछ भी संबल लिए बिना एक सात्त्विक व्यक्ति सद्भावना तथा कठोर परिश्रम के बल पर कहाँ पहुँच सकता है इसका उदाहरण है केले काका। हममें से बहुतों को पता नहीं होगा कि यह हसमुख मिलनसार व्यक्ति इस दुनिया को क्या दे गया। एक ही शब्द में वर्णन करना हो तो वे संयोजक थे- कुशल संयोजक (अंग्रेजी में जिसे आंत्रप्रनर कहते हैं।) दुग्धव्यवसाय, बैंकिंग, शिक्षा, वैद्यकीय सेवा, अभावग्रस्तों की सहाय्यता, भवन-निर्माण, राजनीति, गोसेवा, धर्म-संस्कृति सेवा ऐसा एक भी क्षेत्र नहीं था जहाँ आपने अपनी अभिट छाप नहीं छोडी- निर्माता के रूप में, संचालक की भूमिका में, नेतृत्व प्रदान कर, दूसरों को प्रेरित कर।

इस सबके पीछे उनके व्यक्तित्व की एक खूबी थी, जो हर सफल संयोजक में होती है। वे हमेशा पहले बडा स्वप्न देखा करते (Think big) और फिर वह स्वप्न प्रत्यक्ष में उतारने हेतु संसाधन जुटाने में लग जाते। और उनका सबसे बडा संसाधन था उनके द्वारा सदा के लिए जोडे गये सहयोगी। वे लोगों को पहले अपना लेते, फिर उनकी क्षमतानुरूप उन्हें योग्य भूमिका देते।

स्वयं के घर में श्रीराम वेदविद्यालय की स्थापना से प्रारंभ हुई आपकी सेवायात्रा की यही प्रेरणा रही। पू. स्वामीजी के प्राकट्य का सुवर्ण महोत्सव तथा हीरक महोत्सव तो धुलिया के ही नहीं पूरे देश के इतिहास में संस्मरणीय रहेंगे।

इसी हीरक महोत्सव में ही आपने पूज्यवर का 'वेदश्री तपोवन' का सपना अपना लिया और अंतिम श्वास तक उसे ही चरितार्थ करने हेतु प्रयत्नशील रहे। पू. स्वामीजी के साथ अंतिम वार्तालाप में भी उनका मंतव्य यही रहा - 'स्वामीजी, वेदश्री तपोवन अब हमारा उत्तरदायित्व है। आप निश्चित होकर श्रीरामजन्मभूमि की ओर पूरा ध्यान दीजिए।'

काकाजी, कौन नहीं चाहता कि आप इसी प्रकार हम सबसे जुडे रहते, हंसी-मजाक करते हमसे काम करवा लेते? परंतु ईश्वरीय विधान कुछ और था। आपको श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए हम वचन देते हैं कि आपकी स्मृति हृदय में रख आपसे प्रेरणा लेते हुए हम भारतमाता की सेवा के पथपर प.पू. स्वामीजी के निर्दिष्ट पथपर सदैव चलते रहेंगे। ॐ शांति: शांति: शांति:!

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान – दानदाता सूची

(दिनांक ०१/०४/२०२० से दिनांक ३०/०६/२०२० तक)

१ लाख एवं उससे अधिक

कोलकाता: मे. कोटरीवाला सेवा निधी, **लखनौ:** श्री. बिजेंद्र स्वरूपजी, **हैदराबाद:** मे. कार्तिकेय फार्मा, **मुंबई:** मे. सी.एफ.एम. ॲडव्हाईजर्स प्रा.लि., श्री. आनंद राठी फाउंडेशन, **सोलापुर:** मे. मुरली ॲग्रो इंड., **पुणे:** मे. स्टरलाईट टेक फाउंडेशन

रु. ५० हजार से १ लाख

भिलवाडा: दादी मां भंवरीबाई जासोपा धर्मार्थ ट्रस्ट, **सोलापुर:** श्री. राजगोपालजी मिणियार

रु. २५ हजार से ५० हजार

दिल्ली: श्री. अमितजी गुप्ता, **रुडकी:** श्रीमती राजेश्वरी सिंघल,

रु. १० हजार से २५ हजार

पुणे: श्री. अनिकेतजी जोशी, श्रीमती जयश्री देशमुख, **मंदसौर:** डॉ. श्री. एन.पी. शर्मा, **अहमदनगर:** मे. ओम साई एंटरप्राईजेस, मे. श्रीजी डिस्ट्रिब्युटर्स, **नॉयडा:** श्रीमती शिल्पी मुद्गल, **दिल्ली:** श्री. अनिलजी टंडन, श्रीमती रेनुबाला शर्मा, **औरंगाबाद:** श्री. सचिनजी पाठक, **जबलपुर:** श्री. घनश्यामदासजी सुहाने, **हैदराबाद:** श्री. गोपिकिशन भांगडिया फॅमिली ट्रस्ट, **अमरावती:** श्रीमती उमादेवी गुप्ता, **बंगलौर:** श्री. जगदीशजी झा,

रु. ५ हजार से १० हजार

अहमदनगर: श्री. मुकेशजी पल्लोड, **दिल्ली:** श्री. देवेंद्रजी मुद्गल, **भोपाल:** श्री. किस्सेलाल परमानंद, **फैजाबाद:** श्री. गोपालदासजी अग्रवाल, **बीड:** श्री. त्रिंबकदासजी झंवर, **पुणे:** श्री. धवलजी रसाळ, श्री. श्रीपादजी देशमुख, **भायंदर:** श्री. विकासजी मानधना

प्रतिक्रिया

प. पू. गुरुदेव,

आपने हम करोडो समभक्तों की तथा मोदी प्रशंसकों की भावनाएं ही आपकी अमोघ वाणी से प्रवाहित कर दी। आदरणीय श्री. मोदीजी के साथ आप तो ऐसे लग रहे थे जैसे ऋषि वसिष्ठ समेत स्वामी रामदासजी। आपके पत्रसे स्वामी रामदासजी का स्वप्न ''आनंदवनभुवन'' ही चरितार्थ होने का संतोष छलक रहा है। मेरी दृष्टि में छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के पश्चात् यही समारोह था जो स्वराज्य का – सुराज्य का शुभारंभ सूचित कर रहा था। अत: जैसे स्वामी रामदासजी ने शिवाजी महाराज के गौरव में पत्र लिखा, ठीक उसी स्तर का आपका यह पत्र आजके शिवाजी को – श्री. मोदीजी को है ऐसी मेरी प्रमाणिक धारणा है।

भवदीय,
विवेक सिन्नरकर
(संपादक, सांस्कृतिक वार्तापत्र, पुणे)

स्व. सुरेशजी जाधव : धन्य जीवन – अनेक आयाम

गुरुकृपा

शिबिरार्थी मार्गदर्शन

नियुद्ध निपुणता

योग साधना

पुत्र संस्कार

शस्त्र सज्जता

"DHARMASHREE" Periodical - Quarterly
Posted under P.O. clause No. 129 Regn. No. MAHHIN/2001/4041

* भावप्रसूनाञ्जलि *

देवी-अंश सती आयी थी, करने केले-कुल उद्धार
सुहास्यवदना स्निग्धभाषणा, मर्यादामय हर व्यवहार ।
त्रिशताधिक वैदिक बटुकोंकी, सेवा "माता" बनकर की
स्वर्गाश्रम में अन्नदान की, अग्रेसर रह सेवा दी ।।

साधु-संत सेवा में तत्पर, तीर्थाटन की ललक सदा
लक्ष-लिंग-अर्चना भक्ति से, विविध यज्ञ संपन्न मुदा ।
कथाश्रवण अरु नामस्मरणादिकमय जीवन-सरिता थी
मंदिर-जीर्णोद्धारादिक में, पति की वह शुभ-शक्ति थी ।।

सात्त्विक तेजस्वी मुखमंडल सौम्य स्नेहमयी आभा
शांतमधुर सर्वदा भाव, लक्ष्मी-सी उज्ज्वल कांतिप्रभा ।
धन्य गृहस्थाश्रम सार्थक कर, स्वेच्छाबलसे तपोमयी
आजीवन सेवा कर पति से पहले स्वर्ग सिधार गयी ।।

केले-काकी ना थी केवल, शक्तीकी शुभ झाँकी थी
पुण्यात्मा काका की पत्नी यह तो उसकी लीला थी ।
मातृशक्ति अब सूक्ष्म जगत से, छत्र धरेगी स्नेहमय
अधिक प्रभावी बनकर सेवा-कार्य करेगी धर्ममय ।।

हम सबके प्रिय केले-काका
कभी नहीं विस्मृत होंगे ।
ऐसी भक्ति-भावना, सेवा
उदारता, गुण कहाँ मिलेंगे ?

अनंत की यात्रा पर, काका
निकल पडे यह असह्य होगा ।
बिना आपके काका, जीवन
पहले जैसा कभी न होगा ।।

अश्रु - अंजलि अर्पित करने
आँखे दोनो भर आई हैं ।
थर्राता कर, स्तब्ध हुआ मन
आज लेखनी मूक हुई है ।।

स्वामी गोविंददेवगिरि:

यह पत्र स्वत्वाधिकारधारक श्रीकृष्ण सेवा निधि के लिए मुद्रक और प्रकाशक डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण ने स्वानंद प्रिंटर्स, डेक्कन जिमखाना, पुणे - ४११००४ में मुद्रित कराकर श्रीकृष्ण सेवा निधि, ३ मानसर अपार्टमेंट, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे - ४११०१६ महाराष्ट्र (भारत) से प्रकाशित किया ।
संपादक - डॉ. प्रकाश पांडुरंग सोमण सदस्यों के अतिरिक्त. प्रसाद - मूल्य प्रति अंक रू. ५/- मात्र।